पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

वैशाख-ज्येष्ठ, कलियुगाब्द 5118, मई, 2016

राष्ट्रहित सर्वोपरि

एसजेवीएन विश्व पटल पर

भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा भूटान में 600 मेगावाट की जल विद्युत परियोजना का शिलान्यास किया गया

2014-15 में विद्युत उत्पादन क्षमता में 460 मेगावाट की वृद्धि

- हिमाचल प्रदेश में 412 मेगावाट की रामपुर जल विद्युत परियोजना
- महाराष्ट्र में 47.6 मेगावाट की खिरवीरे पवन ऊर्जा परियोजना

- हिमाचल प्रदेश में देश का सबसे बड़ा भूमिगत 1500 मेगावाट जलविद्युत स्टेशन।
- वित्तीय वर्ष 2011-12 के दौरान 7610 मिलियन यूनिट तथा वित्तीय वर्ष 2013-14 के दौरान 7183 मिलियन यूनिट का रिकार्ड विद्युत उत्पादन।
- एकल राज्य से राष्ट्रीय निगम के रूप में विस्तार एवं राष्ट्र की सीमा से बाहर उपस्थिति।
- ऊर्जा के अन्य स्रोतों, पवन, ताप एवं सौर क्षेत्र में प्रवेश।
- विद्युत ट्रांसमिशन एवं परियोजना परामर्श तथा परामर्शक सेवाएं।
- एनजेएचपीएस को वित्तीय वर्ष 2010-11 के दौरान 'बेहतरीन निष्पादन' के लिए 'गोल्ड शील्ड' पुरस्कार।
- विभिन्न राज्यों एवं पड़ोसी देशों में 13 जलविद्युत परियोजनाओं का निर्माण।

एसजेवीएन लिमिटेड
SJVN Limited
(A joint Venture of Govt of India & Govt. of Himachal Pradesh)
A Mini Ratna & Schedule 'A' PSU **www.sjvn.nic.in**

SHARAD/07/2014

निर्माणाधीन परियोजनाएं: 588 मेगावाट लूहरी, 66 मेगावाट धौलासिद्ध (हिमाचल प्रदेश); 252 मेगावाट देवसारी, 60 मेगावाट नैटवार मोरी, 51 मेगावाट जाखोल सांकरी (उत्तराखण्ड); 900 मेगावाट अरुण- III (नेपाल); 600 मेगावाट खोलोंग्चू, 570 मेगावाट वांग्चू (भूटान); 378 मेगावाट कामेंग- I, 60 मेगावाट रंगानदी-II, 80 मेगावाट दोईमुख स्टेज II एवं सी-रिवर बेसिन (अरुणाचल प्रदेश); 1320 मेगावाट बक्सर ताप विद्युत (बिहार);

सुखार्थाः सर्वभूतानां मताः सर्वाः प्रवृत्तयः
सुखं च न बिना धर्मातस्माधर्मपरो भवेत् ॥

सम्पूर्ण प्राणियों की सभी चेष्टाएँ सुख प्राप्त करने के लिए ही होती है और वह सुख व धर्मों से प्राप्त नहीं हो सकता। अतः धर्म में परायण रहना चाहिए।

वर्ष : 16 अंक : 5

मातृवन्दना

वैशाख-ज्येष्ठ, कलियुगाब्द 5118, मई, 2016

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर

प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, PI-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादकः डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना : पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

देश की संप्रभुता पर . . .

देश की संप्रभुता पर संशय के बादल घिरते नज़र आ रहे हैं। आतंकवाद नए-2 रूप में है। नक्सलवाद पर पूर्णतया रोक लगाना कठिन प्रतीत हो रहा है। अलगाव की प्रवृत्ति कई राज्यों में बढ़ती जा रही है। आरक्षण हेतु आन्दोलन हिंसक होते जा रहे हैं, नेताओं की बयानबाजी, मीडिया जगत का संवेदनशील घटनाओं को निजी लाभ व टी.आर.पी. हेतु बढ़ा-चढ़ा कर बहस और चर्चाओं का विषय बनाना, राजनीतिक दलों द्वारा अल्पसंख्यकों के मसीहा बनने की कोशिश में उन्हें वस्तुतः अपनी अलग पहचान बनाये रखने के लिए मजबूर करना आदि ऐसे अनेक कारण हैं जिनसे राष्ट्र की शांति भंग हो रही है।

सम्पादकीय	राष्ट्रहित सर्वोपरि	3
प्रेरक प्रसंग	आत्मा और शरीर	4
चिंतन	किसान की लालसा	5
आवरण	शिक्षा संस्थानों में भारत	6
संगठनम्	राज्यपाल द्वारा समरसता विशेषांक	10
पुण्य जयंती	तपस्वी राजमाता अहिल्याबाई होल्कर	12
देश-प्रदेश	शनि शिंगणापुर मंदिर में	13
देवभूमि	मंडी का मेरी लाडली अभियान	16
घूमती कलम	कम्युनिस्ट एवं अम्बेडकर	17
काव्य-जगत	मेरे ईश	19
स्वास्थ्य	गले की बीमारियों के घरेलू	21
संस्कृतम	संस्कृतभारती हिमाचलप्रदेशः	22
प्रतिक्रिया	परमाणु हथियार मुक्त दुनिया	24
विविध	समाज हित पत्रकारिता का परम धर्म	25
विश्व दर्शन	सऊदी अरब की सरज़मीं पर	27
समसामयिकी	पेरिस व ब्रुसेल्स के सबक	28
कृषि जगत	प्रेरणास्रोत बना कान्हा गौ-संवर्धन केन्द्र	29
दृष्टि	आशा ने दूर की महिलाओं की निराशा	30
बाल जगत	प्राचीन भारतीय धरोहर नालंदा विश्वविद्यालय	31

पाठकों के पत्र

सम्पादक महोदय,

नये दृष्टिकोण अपना कर इस पत्रिका को इस मुकाम तक पहुँचाया जा सकता है जिससे पाठकों का दायरा बढ़े और हर मजहब का इन्सान इस पत्रिका को पढ़ना पसंद करे। हमें किसी विशेष समुदाय तक इस पत्रिका को सीमित ना रखते हुए मानवीय धर्म, देश के प्रति निष्ठा और भारतीय स्वरूप का दर्शन कराना है। आज जिन विषयों को लेकर मतभेद हैं उस मतभेद को कम कर आपसी भाई चारा स्थापित करना है । यह मेरी व्यक्तिगत इच्छा है, आप मेरी इच्छा से कितना सहमत हैं मैं नहीं जानता। मैं आज की जरूरत के अनुसार ही चिंतन और मनन की इच्छा रखता हूँ। ❖

के. सी. शर्मा गग्गल्वी, कांगड़ा

महोदय,

मातृवन्दना में पशुधन विशेषरूपेण गाय के महत्व के सम्बन्ध में प्राय: पाठ्य सामग्री उपलब्ध रहती है। अब लोग गाय के संरक्षण एवं पालन हेतु जागरूक होने लगे हैं। ग्राम पंचायत मसरूंड जिला चम्बा ने दिनांक 27/2/2016 को यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया है कि ग्राम पंचायत के अन्तर्गत आने वाले गांवों के लोग पंचायत की परमिशन के बिना गौवंश को नहीं बेच पाएंगे। महोदय आपको बता दें कि बूढ़े व दूध न देने वाले गौवंश को लोग बिना पैसे के देते थे और साथ ही उनको कुछ पैसा स्वयं देते थे। यह गौवंश भद्रवाह होकर बेचा जाता था जिस पर अब कुछ हद तक रोक लगी है। ❖ **नरेश कुमार रावत, चम्बा**

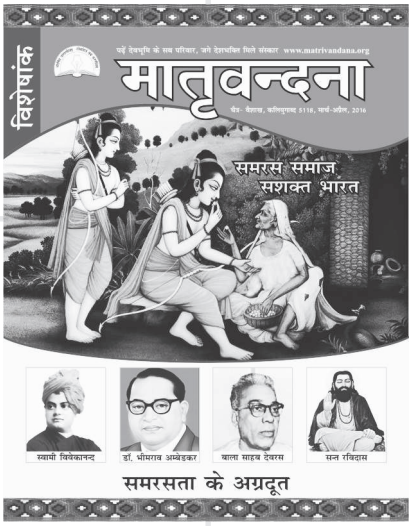

स्मरणीय दिवस (मई)

वरूथिनी एकादशी	3 मई
श्री परशुराम जयंती	8 मई
मनाली छौठ उत्सव	12 मई
श्री बुद्ध पूर्णिमा	21 मई
देवर्षि नारद जयंती	23 मई
मोहिनी एकादशी	17 मई

महोदय,

नववर्ष की हार्दिक मंगलकामनाएं।

समरस समाज-सशक्त भारत स्तम्भ विशेषांक का लाभप्रद सोपान का पुण्य उद्यम करने का समस्त सम्पाकीय टोली का आभारी-अनुगृहीत हूं। डा0 सतीश कुमार शर्मा का लेख ''समरसता युक्त द्वैतवाद'' बहुत ज्ञानवर्द्धक लगा। यह जगत द्वितीय व तृतीयातीत से भी परे है। कहा भी गया है कि 'घटनाशे घटामास न विनश्यति।

यत्साक्षाद्प्रोक्षादकहम् य: आत्मा सर्वान्तर:।'

बृहदारण्यकोपनिषद्।। ईश्वर ब्रह्मस्वरूप मे सर्व व्यापक। उदारचरितानां च वसुधैव कुटुम्बकम्। विषय का मानो गागर में सागर भर लाये हैं । पढ़कर बड़ा आनन्द हुआ, डॉ. सतीश जी का आभार। अधिक आयु होने के कारण लिखने में हुई किसी भी त्रुटि व अटपटी भाषा के लिये क्षमा।❖

मेजर रामनाथ शर्मा
हमीरपुर

राष्ट्रहित सर्वोपरि

देश के प्रत्येक नागरिक के लिए राष्ट्रहित सर्वोपरि है। समाजहित अथवा प्रजा इसमें सर्वथा जुड़ा रहता है। राजनीति,दलगत नीति, शासन-प्रशासन, सत्ता पक्ष-विपक्ष आदि भी इसी लक्ष्य की ओर उन्मुख रहे तो वास्तव में राष्ट्र का स्वरूप अधिक निखर कर उभर आता है और सदृढ़ता एवं सबलता को प्राप्त करता है। पृथक-पृथक विचारधारा,धर्म, सम्प्रदाय,जाति, क्षेत्र एवं भाषा को एकसूत्र में जिससे पिरोया जा सकता है, वह है केवल राष्ट्रीय स्वाभिमान। जब उपर्युक्त सभी तत्व राष्ट्रीय-अस्तित्व को विस्मृत कर स्वयं की स्वार्थपूर्ति में संलग्न हो जाते हैं तो देश के विकास की गति थम जाती है और परस्पर के विश्वास, प्रेम व एकता में भी कमी साफ नजर आती है। वर्तमान में अपने देश की स्थिति भी कुछ इस प्रकार की ही बन चुकी है। देश की संप्रभुता पर संशय के बादल घिरते नजर आ रहे हैं। आतंकवाद नए-2 रूप में है। नक्सलवाद पर पूर्णतया रोक लगाना कठिन प्रतीत हो रहा है। अलगाव की प्रवृत्ति कई राज्यों में बढ़ती जा रही है। आरक्षण हेतु आन्दोलन हिंसक होते जा रहे हैं, नेताओं की बयानबाजी, मीडिया जगत का संवेदनशील घटनाओं को निजी लाभ व टी.आर.पी. हेतु बढ़ा-चढ़ा कर बहस और चर्चाओं का विषय बनाना, राजनीतिक दलों द्वारा अल्पसंख्यकों के मसीहा बनने की कोशिश में उन्हें वस्तुत: अपनी अलग पहचान बनाये रखने के लिए मजबूर करना आदि ऐसे अनेक कारण हैं जिनसे राष्ट्र की शांति भंग हो रही है। जहां एक ओर हमारे सैनिक देश की सीमाओं की रक्षा तथा आंतकवाद को मिटाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे रहे हैं, वहीं दूसरी ओर देश के भीतर कुछ लोग अपने धर्ममार्ग से हटकर आतंकवादी गतिविधियों में कल के राष्ट्र-निर्माताओं के उत्पन्न होने को आशा भरी दृष्टि से देख रहे हैं, वहां यदि देश के टुकड़े-2 करने तथा आंतकवादियों का साथ देने के नारे सुनाई देने लगे और साथ ही आतंकवादियों की बरसी, महिषासुर का जन्मदिन मनाया जाये तो कल्पना कीजिए कि अपने इस देश की दिशा क्या होगी?

अब तो ऐसा लगने लगा है कि राष्ट्रविरोधी बनना, इसकी बर्बादी की बातें करना और आतंकवादियों को सही ठहराना इस देश में तथाकथित बुद्धिजीवियों का एक बौद्धिक फैशन बन चुका है। जे.एन.यू. का कन्हैया मीडिया, लेखकों और पत्रकारों द्वारा स्टार बना दिया गया। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ने राष्ट्रीय-मर्यादा की सारी हदें तोड़ दी हैं। शर्म आती है कि केन्द्र व विपक्ष में बैठे राजनीतिक दल और उनसे जुड़े स्तम्भकार-लेखक, पत्रकार और मीडिया चलाने वाले कॉर्पोरेट समूह राष्ट्रहित को अनदेखा कर देश को खंडित करने वाली शक्तियों को हतोत्साहित करने की बजाय उन्हें प्रोत्साहित करने में तुले हुए हैं। तिरंगा फहराने, वन्देमातरम् और भारतमाता की जय बोलने पर भी सवाल खड़े किये जा रहे हैं। संविधान सबके लिए एक है चाहे बहुसंख्यक हो या अल्पसंख्यक समाज। राष्ट्रीय प्रतीक एवं राष्ट्र-उद्बोधन के नारे राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाते हैं, इन्हें हम विस्मृत नहीं कर सकते।

आत्मा और शरीर

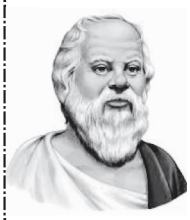

सुकरात को सत्य पर अडिग रहने के कारण मृत्युदंड की सजा सुनाई गई। जिस दिन उन्हें विष दिया जाना था, उससे पहली रात वे अपने शिष्यों के बीच शांतचित्त बैठकर उन्हें सत्य, आत्मा और सिद्धांतों के महत्व पर प्रवचन कर रहे थे। उनकी मृत्यु के प्रति निर्भयता देखकर सभी आश्चर्यचकित थे। एक शिष्य ने पूछा, 'मृत्यु के बाद आपके शरीर की अंत्येष्टि किस विधि से की जाए।'

यह सुनते ही सुकरात ने पूछा, 'वे मेरे शरीर का नाश करेंगे। आत्मा को तो आघात पहुंचा नहीं सकते। फिर तुम उस नाशवान शरीर की चिंता क्यों करते हो कि उसका क्या होगा। उसे किस तरह दफनाया जाना चाहिए।' कुछ क्षण बाद उन्होंने समझाया, 'मेरे शरीर ने नहीं, आत्मा ने ही सत्य का घोष किया है, असत्यवादियों का विरोध किया है। वे आत्मा का तो बाल बांका कर नहीं सकते, तैश में आकर मेरे शरीर को नष्ट करने पर तुले हुए हैं। तुम भी यदि नाशवान शरीर की अंत्येष्टि की चिंता में घुलोगे, तो आत्मा की पहचान कौन करेगा?' सुकरात ने आत्मा तथा शरीर के अंतर को समझा दिया। ❖

जीवन दर्शन

कठिन से कठिन परिस्थिति में भी कुपात्र को दिया गया व उससे लिया गया दान दोनों ही भारतीय दर्शन में वर्जित बताए गए हैं। सच तो यह है कि विश्वभर में लगभग इसी मान्यता पर बल दिया गया है। अलैक्जेण्डरिया में एक बार इतना भयानक अकाल पड़ा कि लोग भूख-प्यास से मरने लगे। जानवरों और परिंदों के लिए तो जीवन का कोई सहारा नहीं बचा था। सब त्राहि-त्राहि कर रहे थे। ऐसे में एक अमीर आदमी शहर में आया और गरीबों में सोना-चांदी बांटने लगा। कुछ लोग हातिमताई के पास गए और उनसे पूछा कि क्या हमें उस आदमी के पास जाकर भोजन कर लेना चाहिए? हातिमताई ने कहा- 'शेर चाहे अपनी गुफा में मर जाए, लेकिन वह दूसरे की जूठन नहीं खाता। अपना शिकार वह खुद पकड़ता है। अकाल से निकलने का कोई उद्यम सोचो, कोई उपाय करो, लेकिन खैरात पर जीने का रास्ता नहीं चुनो। तीन बातें हमेशा याद रखना फेंका हुआ रोटी का टुकड़ा कुत्ता खाता है, इसलिए ऐसी खैरात कभी न लेना जो श्रद्धा से नहीं दी गई हो। नीच मनुष्य खैरात देकर अहसान जताता है, इसलिए तुच्छ व्यक्ति के आगे हाथ कभी नहीं फैलाना चाहिए। तीसरे ऐसे व्यक्ति से भी कभी कुछ नहीं लेना चाहिए, जिसमें कोई गुण नहीं हो, क्योंकि वह पैसे के बूते पर स्वयं को श्रेष्ठ साबित करना चाहता है।❖

राष्ट्रपति जनरल थेन सेन एक प्रेरक व्यक्तित्व

31 मार्च 2016 तक एक छोटे से देश म्यांमार के राष्ट्रपति रहे जनरल थेन सेन अपनी सेवानिवृत्ति के अगले दिन ही अपना शेष जीवन समाज सेवा में लगाने के लिए बौद्ध सन्यासी बन गए हैं और इस प्रक्रिया को पूरी करने के लिए वे पांच दिनों के लिए बौद्ध मठ में रहने चले गए। उन्होंने बिना किसी प्रचार के चुपचाप अपना जीवन समाज को समर्पित कर अपने देश के लिए एक प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

अपने देश में भी ऐसे अनेकों उदाहरण हमने देखे हैं। तत्कालीन राज्यसभा सदस्य तथा राष्ट्रीय नेता रहे स्व. नानाजी देशमुख ने भी 60 साल की आयु के बाद सब पदों से इस्तीफा देकर समाज सुधार के कार्यों के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था । उनके द्वारा प्रारम्भ किये गए दीन दयाल शोध संस्थान (मथुरा, गोंडा तथा चित्रकूट) के माध्यम से आज हजारों गाँवों के लाखों युवक युवतियों को रोजगार मिला है तथा समाज हित के अनेकों शोध कार्य हो रहे हैं ।

पूर्व राष्ट्रपति डा. अब्दुल कलाम ने पूरा एक दिन इन केन्द्रों को देखने में बाद कहा था कि 'यदि हर व्यक्ति ऐसा करना शुरू कर दे तो भारत की गरीबी कुछ वर्षों में समाप्त हो जायेगी। आज ऐसे अनुभवी लोगों की समाज को अत्यंत आवस्यकता है।' अंत में थेन सेन को उनके इस नए जीवन के लिए शुभकामनायें। उनके इस प्रयास से विश्व भर के लोग जरूर प्रेरणा लेंगे। ❖

किसान की लालसा

– संजय वशिष्ठ

एक मध्यम व छोटे वर्ग का किसान था। कहते हैं, मनुष्य स्वप्न देखता है तो वो ज़रूर पूरा होता है। मगर किसान के सपने कभी-कभी ही पूरे होते हैं। बड़े अरमान और कड़ी मेहनत से फसल तैयार करता है और जब तैयार हुई फसल को बेचने मंडी जाता है, बड़ा खुश होते हुए जाता है, बच्चों से कहता है आज तुम्हारे लिये नये कपड़े लाऊंगा, फल और मिठाई भी लाऊंगा।

पत्नी से कहता है, तुम्हारी साड़ी भी कितनी पुरानी हो गई है, आज एक साड़ी नई लेता आऊंगा। पत्नी अरे नहीं जी, ये तो अभी ठीक है, आप तो अपने लिये जूते ही लेते आना कितने पुराने हो गये हैं। जब किसान मंडी पहुँचता है, ये उसकी मजबूरी है वो अपने माल की कीमत खुद नहीं लगा पाता, व्यापारी उसके माल की कीमत अपने हिसाब से तय करते हैं। एक साबुन की टिकिया पर भी उसकी कीमत लिखी होती है, एक माचिस की डिब्बी पर भी उसकी कीमत लिखी होती है, लेकिन किसान अपने माल की कीमत खुद नहीं कर पाता।

खैर माल बिक जाता है, लेकिन कीमत उसकी सोच अनुरूप नहीं मिल पाती। माल तौलाई के बाद जब पेमेन्ट मिलता है तो वो सोचता है इसमें से दवाई वाले को देना है, खाद वाले को देना है, मजदूर को देना है, अरे हाँ! बिजली का बिल भी तो जमा करना है। सारा हिसाब लगाने के बाद कुछ बचता ही नहीं। वो मायूस हो घर लौट आता है, बच्चे उसे बाहर ही इन्तजार करते हुए मिल जाते हैं, 'पिताजी! पिताजी!' कहते हुये उससे लिपट जाते हैं और पूछते हैं 'हमारे नये कपड़े नहीं लाये?' पिता 'वो क्या है बेटा., कि बाजार में अच्छे कपड़े मिले ही नहीं, दुकानदार कह रहा था इस बार दीपावाली पर अच्छे कपड़े आयेंगे तब ले लेंगे। पत्नी समझ जाती है, फसल कम भाव में बिकी है, वो बच्चों को समझाकर बाहर भेज देती है। पति 'अरे हाँ!! तुम्हारी साड़ी भी नहीं ला पाया' पत्नी कोई बात नहीं जी, हम बाद में ले लेंगे लेकिन आप अपने जूते तो ले आते' पति अरे! वो तो मैं भूल ही गया' पत्नी भी पति के साथ सालों से है, पति का मायूस चेहरा और बात करने के तरीके से ही उसकी परेशानी समझ जाती है, लेकिन फिर भी पति को दिलासा देती है, और अपनी नम आँखों को साड़ी के पल्लू से छिपाती रसोई की ओर चली जाती है, फिर अगले दिन सुबह पूरा परिवार एक नयी उम्मीद, एक नई आशा, एक नये सपने के साथ नई फसल की तैयारी के लिये जुट जाता है। यह सच्चाई हर छोटे और मध्यम किसान के जीवन में हर साल दोहराई जाती है, हम ये नहीं कहते कि हर बार फसल के सही दाम नहीं मिलते, लेकिन जब भी कभी दाम बढ़ें, मीडिया वाले कैमरा ले के मंडी पहुंच जाते हैं और ख़बर को दिन में दस-दस बार दिखाते हैं, कैमरे के सामने शहरी महिलायें हाथ में बास्केट ले कर अपना मेकअप ठीक करती मुस्कराती हुई कहती हैं, सब्जी के दाम बहुत बढ़ गये हैं, हमारी रसोई का बजट ही बिगड़ गया।

कभी अपने बास्केट को कोने में रखकर किसी खेत में जाकर किसान की हालत तो देखिये, वो किस तरह फसल को पानी देता है। कई लीटर दवाई से भरी हुई टंकी पीठ पर लाद कर छिड़काव करता है, छः किलो खाद की तगड़ी उठा कर खेतों में घूम-घूम कर फसल को खाद देता है, अघोषित बिजली कटौती के चलते रात-रात भर बिजली चालू होने के इन्तजार में जागता है, चिलचिलाती धूप में सिर का पसीना पैर तक बहाता है, जहरीले जन्तुओं का डर होते भी खेतों में नंगे पैर घूमता है। जिस दिन यह वास्तविकता आप अपनी आँखों से देख लेंगे, उस दिन आपकी रसोई में रखी हुई सब्जी, प्याज, गेहूँ, चावल, दाल, फल, मसाले, दूध सब सस्ते लगने लगेंगे। ❖ **सोशल मीडिया ब्लॉग से लिया गया**

शिक्षा संस्थानों में भारत विरोध के पीछे किसका षड्यंत्र है

-लोकेन्द्र सिंह

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में लगे भारत विरोधी नारों को देश भूल भी नहीं पाया था कि श्रीनगर स्थित राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) में भारत विरोधी छात्रों के तुष्टीकरण और भारत के समर्थन में तिरंगा फहरा रहे छात्रों की पिटाई का मामला सामने आ गया है। पहले हैदराबाद फिर जेएनयू, जादवपुर विश्वविद्यालय और अब श्रीनगर के एनआईटी से भारत विरोध की आवाजें आ रही हैं, देश समझ नहीं पा रहा है कि आखिर हमारे शिक्षा संस्थानों में चल क्या रहा है। देश के प्रमुख शिक्षा संस्थानों में भारत विरोध के यह पाठ कब से पढ़ाए जा रहे थे। पूर्ववर्ती सरकारें क्यों आंख मूंदकर बैठी हुई थी। सवाल शिक्षकों से भी है कि उनकी भूमिका क्या है?क्या शिक्षक भी इस कुपाठ में शामिल हैं?यकीनन इन घटनाओं के सामने आने से देश चिंतित है कि आखिर हमारे शिक्षा संस्थानों में किस तरह का नेतृत्व तैयार हो रहा है। केन्द्र और राज्य सरकारों को तत्काल अभिव्यक्ति की आज़ादी के नाम पर देश के साथ न्याय करना चाहिए और उन्हें आगे आकर युवा पीढ़ी को देश प्रेम का पाठ पढ़ाना चाहिए।

श्रीनगर के राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान का विवाद छात्रों पर महज बेरहमी से लाठीचार्ज का मामला नहीं है। इस विवाद की जड़ में भी भारत विरोध की मानसिकता है। यह विवाद उस वक्त शुरू हुआ जब टी-20 विश्वकप के एक मुकाबले में वेस्टइंडीज के हाथों भारतीय दल की हार होती है। इसके बाद संस्थान के कुछ छात्रों ने जश्न मनाया और पाकिस्तान का झंडा लहराया। यह जश्न वेस्टइंडीज की जीत पर नहीं था। यदि ऐसा होता तब कोई समस्या भी नहीं होनी चाहिए थी। लेकिन यह जश्न भारत की हार पर था। जम्मू-कश्मीर मूल के छात्रों के मन में अपने ही देश के प्रति भरी गई जहरीली शिक्षा का प्रकटीकरण था। संस्थान के दूसरे छात्रों ने भारत के समर्थन में नारे लगाकर और तिरंगा फहराकर जब इस प्रदर्शन/जश्न का विरोध किया तब वहां तनाव फैल गया। भारत की पराजय पर खुशी जाहिर करने वाले दूसरे गुट की सहिष्णुता यहां खत्म हो गई।

सबसे अधिक चिंता का विषय यह है कि पाकिस्तान का झंडा फहराने वाले छात्रों के दबाव में एनआईटी प्रशासन ने तिरंगा फहराने वाले छात्रों को धमकाने की कोशिश की है। पीड़ित छात्रों का आरोप है कि प्रशासन की सहमति से ही पुलिस ने उनके ऊपर लाठीचार्ज किया है। यह कितना उचित है कि भारत का विरोध करने वाले छात्रों के खिलाफ कोई कार्रवाई की नहीं गई बल्कि भारत का समर्थन करने वालों की पिटाई करा दी गई। जम्मू-कश्मीर सरकार और केन्द्र सरकार को इस मामले में गंभीरता से प्रशासन की भूमिका और भारत विरोधी गतिविधि में शामिल छात्रों की जांच करानी चाहिए। भारतीय जनता पार्टी के सामने अधिक चुनौती है क्योंकि जम्मू-कश्मीर में वह पीडीपी के साथ सरकार में शामिल है। उसके सरकार में रहते हुए भी छात्रों पर पुलिस ने बेरहमी से लाठीचार्ज कैसे किया।

नागफनी से कंटीले इस प्रश्न से विपक्षी दल भी सत्तादल को लहूलुहान करने का प्रयास कर ही रहे हैं। हालांकि सोचने वाली बात यह भी है कि ये विपक्षी दल एवं बुद्धिजीवी भारत विरोधी गतिविधियों में शामिल छात्रों और उन्हें भारत विरोधी पाठ पढ़ाने वाले लोगों से सवाल क्यों नहीं पूछते हैं?बहरहाल शिक्षा संस्थानों के ये घटनाक्रम किसी भी सूरत में देशहित में नहीं है। इन घटनाक्रमों में शामिल छात्रों के पीछे राष्ट्र विरोधी ताकतें हैं।

...शेष पृष्ठ संख्या 9 पर

लाल और नीली कटोरी

- विजय कुमार

इन दिनों दिल्ली का जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय काफी चर्चा में है। गत नौ फरवरी को वहां छात्रों तथा कुछ बाहरी लोगों ने पाकिस्तान जिन्दाबाद, भारत तेरे टुकड़े होंगे य इंशा अल्लाह, इंशा अल्लाह तथा भारत की बरबादी तक जंग चलेगी जैसे देशद्रोही नारे लगाए। वे अफजल गुरू, मकबूल बट तथा याकूब मेमन जैसे देशद्रोही आतंकियों की याद में यह कार्यक्रम कर रहे थे। उस समय छात्रसंघ का अध्यक्ष भी वहीं था। उसने नारे लगाए या नहीं, इस पर दो मत हैं पर इतना तो सच है कि उसने इन्हें रोका नहीं। अत: देशद्रोह के आरोप में उसे जेल जाना पड़ा। इस पर वामपंथियों ने हंगामा मचा दिया। देश से ही नहीं, तो विदेश से भी उसके समर्थन में अर्जी-फर्जी लोगों के बयान आने लगे। मीडिया में जमे वाममार्गियों ने इस विषय को देशव्यापी बना दिया। सारे देश ने दूरदर्शन पर वे देशद्रोही नारे लगते हुए सुने और देखे। फिर भी विरोध में अन्धे नेता उसका समर्थन करने पहुंच गए।

JNU में चेहरा ढंककर आने वाले 'बाहरी तत्व' थे !

सबसे अधिक शर्मनाक तो मुख्य राजनीतिक दल के युवराज का वहां पहुंचना था। वे प्राय: कहते हैं कि मेरे परिवार ने देश के लिए बहुत बलिदान किए हैं, पर फिलहाल उन्हें बंगाल का चुनाव दिखाई दे रहा है, जहां पार्टी अपने अस्तित्व से जूझ रही है। वामपंथियों से समझौता कर युवराज जहां कुछ सीटें पाना चाहते हैं वहां वह मुख्यमंत्री से पुराना हिसाब भी चुकाना चाहते हैं। इसलिए वे देशद्रोहियों का समर्थन करने चले गए।

वामपन्थियों ने छात्र संघ अध्यक्ष को छुड़ाने का खूब प्रयास किया पर न्यायालय ने 20 दिन बाद उसे छह महीने के लिए सशर्त् जमानत दी। इस दौरान उसके आचरण पर नजर रखी जाएगी तथा उसे जांच हेतु थाने में आना होगा। इसका परिणाम यह हुआ कि ज.ने.वि. में हुए स्वागत जुलूस में तिरंगे झण्डे को प्रमुखता से फहराया गया। छात्र संघ अध्यक्ष ने अपने भाषण में भारत के संविधान में आस्था व्यक्त की तथा अपना आदर्श अफजल गुरू की बजाय हैदराबाद वि.वि. के छात्र रोहित वेमुला को बताया, जिसने पिछले दिनों आत्महत्या की थी। मीडिया में आजकल इलैक्ट्रॉनिक मीडिया हावी है, जो विज्ञापन की खाद से चलता है। बाजार और विज्ञापन की दुनिया सदा नए की ओर भागती है। इसी मीडिया ने मोदी और केजरीवाल को हीरो बनाया था। बहुत दिनों से उन्हें कुछ नया नहीं मिल रहा था। जेएनयू ने यह कमी पूरी कर दी। द्वापर में कान्हा का जन्म कारागार में हुआ था। मीडिया ने तिहाड़ में इस कलियुगी कन्हैया के नेतावतार को लपक लिया। अत: जेल में आकर ज.ने.वि. में हुआ उसका भाषण कई चैनलों ने दिखाया। इस भाषण में कन्हैया ने कहा कि जेल के बर्तनों में उसे लाल और नीले रंग की दो कटोरी भी मिली थी। उसने लाल को वामपन्थ तथा नीले को अम्बेडकरवाद का प्रतीक कहा। इस प्रकार उसने बताने का प्रयास किया कि वे दोनों शक्तियां मिलकर मोदी और संघ को उखाड़ सकती हैं। वस्तुत: उसकी सोच नई नहीं है। जिन लोगों की सोच तोड़ने और उखाड़ने तक ही सीमित है, वह उन्हीं का अनुयायी है।

'भारत तेरे टुकड़े होंगे' जैसे नारे इस देशद्रोही चिन्तन में से ही उपजे हैं, पर क्या यह विचार कभी सच हो सकेगा? कम से कम आज तो ऐसा नहीं लगता। भारत में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना सन् 1924 में हुई।

स्वाधीनता आंदोलन के दौरान उन्होंने अंग्रेजों का साथ दिया। सन् 1962 में चीन के राष्ट्राध्यक्ष माओ को अपना अध्यक्ष तथा चीनी सेनाओं को 'मुक्ति सेना' कहा। अत: वामपंथ जड़ पकड़ने से पहले ही सूखने लगा। किसी समय देश के कई राज्यों से कम्युनिस्ट विधायक और सांसद जीतते थे, पर आज वह एक-दो कोनों में ही शेष बचे हैं। अब वहां से भी उनके पैर उखड़ रहे हैं। मजबूरी में प. बंगाल में भी वे कांग्रेस को साथ ले रहे हैं, जहां 35 साल तक उनका राज्य रहा है। भारत में कितने लाल खेमे हैं, यह उनका बड़े से बड़ा नेता भी नहीं बता सकता।

छह हजार छात्रों वाले ज.ने.वि. में ही नक्सली, अति नक्सली, माओ, लेनिन और स्टालिनवादी जैसे कई गुट हैं। किसी को रूस से प्राणवायु मिलती है, तो किसी को चीन से। मा.क.पा., भा.क.पा. और फारवर्ड ब्लॉक जैसे कुछ गुट चुनावी राजनीति करते हैं और बाकी मारकाट। आज जब इनके अस्तित्व पर ही संकट है, तब भी ये एक नहीं हो सकते, तो ये किसी नीले या पीले गुट से कैसे मिलेंगे, इसका उत्तर शायद कन्हैया के पास ही होगा। लालपन्थियों के सिकुड़ने का एक रोचक उदाहरण पिछले दिनों पढ़ा। एक अध्यापक ने लालपन्थी से पूछा कि यदि किसी प्रश्न पत्र में सौ प्रश्न हों और तुम 85 को छोड़कर केवल 15 के ही उत्तर दो, तो तुम्हें कितने नम्बर मिलेंगे? उसने कहा कि यदि सब उत्तर ठीक हों, तो 15 मिलेंगे। अध्यापक ने कहा कि भारत की जनसंख्या में 85 प्रतिशत हिन्दू हैं। तुम दिन-रात उन्हें गाली देते हो। शेष 15 प्रतिशत के आधार पर देश में राज करने की बात सोचना मूर्खता नहीं तो और क्या है? शायद लालपन्थियों की समझ में ये बात अब आ रही है। बंगाल में दुर्गा पूजा महोत्सव में उनके सब नेता जाते हैं, पर पार्टी इनसे अलग रहती है। केरल के ओणम महोत्सव में भी ऐसा ही होता है, पर अब वे पार्टी स्तर पर इनमें सहभागिता करने लगे हैं।

कन्हैया ने नीली कटोरी के माध्यम से अम्बेडकरवादियों को अपने साथ आने को कहा है, पर वह भूल गया कि इन दोनों में मूलभूत अन्तर हैं। वामपन्थ एक विचार है, जो सबके लिए खुला है, जबकि अम्बेडकरवाद मुख्यत: कुछ निर्धन जातियों पर आधारित है। लालपन्थियों के खुदा विदेश में हैं, जबकि अम्बेडकरवादी सौ प्रतिशत भारतीय हैं। कुछ बातों में उनके धार्मिक और सामाजिक नेताओं से मतभेद हैं। शासन व्यवस्था से भी कुछ नाराजगी है, पर उनकी निष्ठा केवल और केवल भारत के प्रति है। लालपन्थी हिंसक हैं, जबकि अम्बेडकरवादी पूर्ण धार्मिक हैं। उनकी हर बस्ती में श्रीराम, श्रीकृष्ण, मां दुर्गा, शिव और हनुमान् के साथ महर्षि वाल्मीकि, सन्त कबीर, सन्त रविदास आदि महापुरूषों की मूर्त्तियों वाले मंदिर मिलते हैं। वे उग्र हो सकते हैं, पर उग्रवादी नहीं।

वे जेहादी तो कभी नहीं हो सकते। क्योंकि उन पर सर्वाधिक अत्याचार मुस्लिम काल में ही हुआ है। उन्हें घृणित कर्म के लिए मुस्लिम शासकों ने ही मजबूर किया है, पर वामपन्थी खुशी से जेहादियों की गोद में बैठ रहे हैं। ज.ने.वि. काण्ड इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

वामपन्थ एक विचार है, जो सबके लिए खुला है, जबकि अम्बेडकरवाद मुख्यत: कुछ निर्धन जातियों पर आधारित है। लालपन्थियों के खुदा विदेश में हैं, जबकि अम्बेडकरवादी सौ प्रतिशत भारतीय हैं। कुछ बातों में उनके धार्मिक और सामाजिक नेताओं से मतभेद हैं। शासन व्यवस्था से भी कुछ नाराजगी है, पर उनकी निष्ठा केवल और केवल भारत के प्रति है। लालपन्थी हिंसक हैं, जबकि अम्बेडकरवादी पूर्ण धार्मिक हैं। उनकी हर बस्ती में श्रीराम, श्रीकृष्ण, मां दुर्गा, शिव और हनुमान् के साथ महर्षि वाल्मीकि, सन्त कबीर, सन्त रविदास आदि महापुरूषों की मूर्त्तियों वाले मंदिर मिलते हैं। वे उग्र हो सकते हैं, पर उग्रवादी नहीं। वे जेहादी तो कभी नहीं हो सकते।

अर्थात् लालपन्थी और अम्बेडकरवादी दो विपरीत ध्रुव हैं। डॉ. अम्बेडकर ने वामपन्थियों के बारे में जा कहा है, वह सर्वज्ञात है। नमूने के लिए एक कथन का उल्लेख ही प्र्याप्त है, ''मैं कम्युनिस्टों से मिल जाऊंगा, ऐसा कुछ लोग बोलते हैं। इसकी जरा भी सम्भावना नहीं है। अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए मजदूरों का शोषण करने वाले कम्युनिस्टों का मैं कट्टर दुश्मन हूं।'' (दलित सम्मेलन, मैसूर, 1937)

अम्बेडकरवाद को राजनीतिक दृष्टि से देखें। कभी सारे अम्बेडकरवादी 'रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इण्डिया' में थे। इसका काम मुख्यत: महाराष्ट्र तक सीमित था, पर आज उसके कई टुकड़े हो चुके हैं। सभी गुट कांग्रेस या भा.ज.पा. के साथ मिलकर सत्ता भोगने की जुगत में लगे रहते हैं। डॉ. अम्बेडकर के बाद दलित वर्ग को राजनीतिक शक्ति बनाने का सफल प्रयास श्री कांशीराम ने किया, पर दिल्ली पर राज करने का सपना उनके सामने ही टूट गया। उन्होंने उ.प्र. में मायावती को मुख्यमंत्री बनाया, पर उसने कांशीराम द्वारा विभिन्न राज्यों में तैयार किए गए नेताओं को अपने सामने झुकने को मजबूर किया। अत: सब नेता इधर-उधर हो गए। आज मायावती के साथ धनबल है और उसे लपकने को आतुर चाटुकारों की टोली। अर्थात् डॉ. अम्बेडकर हों या कांशीराम, उनके समर्थक किसी ठोस सिद्धान्त, कार्यक्रम और नेतृत्व के अभाव में बिखरते चले गए। आज दलित समाज के सर्वाधिक विधायक और सांसद भा.ज.पा. के टिकट पर जीतते हैं, क्योंकि जहां राजनीतिक रूप से भा.ज.पा. लगातार सशक्त हुई है, वहां उसका काम भी इन वर्गों में बढ़ रहा है। जाति का ढोल नहीं पीटते, पर नगर और तहसील से लेकर केन्द्रीय टोली तक में स्वाभाविक रूप से हर जाति और वर्ग के कार्यकर्ता होते हैं। यह विचार के सभी संगठन अपने स्तर पर अनुसूचित जातियों और जनजातियों में सेवा के काम कर रहे हैं। दूसरी ओर अन्य राजनीतिक दल या वामपन्थी कबीले इनके प्रति सहानुभूति का ढोंग ही करते हैं। राजनेता मानते हैं कि इस वर्ग का कल्याण सत्ता द्वारा ही हो सकता है, पर राष्ट्र की सोच है कि इसके लिए पूरे समाज को आगे आना होगा।

आपातकाल में मेरठ जेल में हमारे साथ कई नक्सली भी थे। एक दिन उन्होंने दीवार पर अंग्रेजी में लिखा- 'Extreme hatred is the basis of our work.' (अत्यधिक घृणा हमारे काम का आधार है।) राष्ट्रवादी लोगों ने उसके नीचे लिख दिया- शुद्ध सात्विक प्रेम अपने कार्य का आधार है। इन पंक्तियों में ही वामपन्थियों के सिकुड़ने और राष्ट्रवादियों के आगे बढ़ने का रहस्य छिपा है। ऐसे में कन्हैया वामपन्थ और अम्बेडकरवादियों के किस कबीले और गुट के मिलने की बात कर रहा है?कन्हैया जैसे नेता धूमकेतु की तरह होते हैं, जो कुछ समय तक आकाश में अपनी चमक बिखेर कर लुप्त हो जाते हैं। इसलिए लाल और नीले के मिलन के सपने देखना छोड़कर उसे अपनी पढ़ाई और राजनीतिक भविष्य की चिन्ता करनी चाहिए। ❖ **लेखक प्रख्यात स्तम्भकार हैं।**

...पृष्ठ 6 का शेष

इस बात का अनुभव जेएनयू प्रकरण में भी हो चुका है। कैसे बाहरी छात्र जेएनयू कैम्पस में आकर भारत के टुकड़े करने के नारे लगाकर चले गए। उनके आने और जाने का प्रबंध किसने किया? उस कार्यक्रम के मुख्य आयोजक और देशद्रोह के आरोपी उमर खालिद के संबंध में भी यह बात सामने आई थी कि उसका संबंध अलगाववादी संगठनों से है। इसलिए इस आशंका से फौरी तौर पर इन्कार नहीं किया जा सकता है कि शिक्षा परिसरों में हो रही भारत विरोधी गतिविधियों के पीछे सुनियोजित षड्यंत्र है। इसलिए सरकार को शिक्षा परिसरों से आ रहीं भारत विरोधी आवाजों पर कान धरने की आवश्यकता है। इसके साथ ही छात्रों, शिक्षकों और सरकारों को मिलकर यह तय करना होगा कि शिक्षा संस्थान विद्या अध्ययन के ही केन्द्र बनें भारत विरोधी राजनीति के अड्डे नहीं। देश की भावी पीढ़ी शिक्षा संस्थानों से देश प्रेम, देश के प्रति कर्तव्य के पाठ पढ़कर निकले न कि देश विरोधी पाठ पढ़कर। ❖ **लेखक पत्रकारिता अध्यापन से जुड़े हुए हैं।**

राज्यपाल द्वारा समरसता विशेषांक का विमोचन

राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने किया मातृवन्दना पत्रिका का समरसता विशेषांक का विमोचन। राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने प्रदेश की सबसे अधिक प्रसार वाली मासिक जागरण पत्रिका मातृवन्दना के ''समरस समाज: सशक्त भारत'' विषय पर प्रकाशित विशेषांक का विमोचन किया। भारतीय नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रमी सम्वत् 2073 के अवसर पर शिमला के सनातन धर्म स्कूल में आयोजित विशेषांक विमोचन कार्यक्रम में राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने समाज में समरसता पैदा करने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि हर मनुष्य ईश्वर की संतान है और भेदभाव मनुष्य ने किया, भगवान ने नहीं। उन्होंने कहा कि जात-पात के नाम पर हम समाज को तोड़ रहे हैं। हमारी संस्कृति वेदों की है जिसमें जात-पात का उल्लेख नहीं है। उन्होंने कहा कि वेद हमें समरसता का ज्ञान देते हैं। वेदों के अनुसार हमारा समाज चार वर्णों में बांटा गया था न कि जाति-पाति के आधार पर। उन्होंने कहा कि पूर्व में समाज जन्म पर आधारित न होकर कर्म पर आधारित था। हमने स्वार्थवश इसे जन्म आधारित व्यवस्था बना दिया इसलिए आज हमें समाज की सोच बदलने की जरूरत है।

राज्यपाल ने कहा कि भारत धर्म परायण देश है, लेकिन यह दुखद है कि धर्म के नाम पर शास्त्रों के अर्थ ही गलत समझे गये। समाज को जोड़ने वाले यथार्थ शब्दों के स्थान पर स्वार्थ शब्दों की व्याख्या होने लगी। राज्यपाल ने कहा कि ''जिसे धारण करने से मैं सुखी हूँ और जो धारण करने आए वह भी सुखी हो यही धर्म है''। उन्होंने कहा कि भारत की संस्कृति एवं मान्यताएं बहुत पुरानी हैं। हमें विश्वगुरू कहा जाता था, लेकिन जात-पात व मजहब के नाम पर हम गल्तियां करते चले गये, जिसके दुष्परिणाम आज हमारे सामने हैं, जो चिन्ता का विषय है।

मातृवन्दना के प्रयासों की सराहना करते हुए राज्यपाल ने कहा कि समाज में सजगता लाने के लिए पत्रिका के प्रयास सराहनीय हैं। उन्होंने कहा कि मातृवन्दना के माध्यम से समरसता जैसे विषय को उठाकर जो पवित्र लक्ष्य लिया गया है, वह सामाजिक चेतना के लिए निश्चित तौर पर महत्वपूर्ण है। उन्होंने विश्वास जताया कि भविष्य में भी पत्रिका के यह प्रयास जारी रहेंगे।

कार्यक्रम अध्यक्ष सेवानिवृत्त आई.जी. प्रदीप कुमार सरपाल ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि विदेशी आक्रमणकारियों ने हमारी अखण्डता को चोट पहुंचाई है और मौजूदा परिपेक्ष्य में इसके लिए हम स्वयं जिम्मेदार हैं। सामाजिक बुराईयों को दूर कर और राह से भटके युवाओं को सही राह पर लाकर हम अखण्ड भारत की सुदृढ़ नींव रख सकते हैं। उन्होंने मातृवन्दना संस्थान को उसके प्रयासों के लिए बधाई दी। मातृवन्दना पत्रिका के विशेषांक संपादक दलेल ठाकुर ने इस अवसर पर मातृवन्दना पत्रिका की पृष्ठभूमि की विस्तृत जानकारी दी और विशेषांक विषय पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मातृवन्दना पत्रिका प्रदेश के 16 हजार गांवों में से करीब 9 हजार गांवों तक अपनी पहुंच बना चुकी है और अगले दो वर्षों में प्रदेश के हर गांव तक इस पत्रिका को पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। दलेल ठाकुर ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हाल ही में राज्यस्थान के नागौर में हुई अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा में समरसता पर प्रस्ताव पारित कर सम्पूर्ण समाज को समरस बनाने की शुरूआत की है जिसके निश्चित रूप से सकारात्मक परिणाम सामने आने वाले हैं। मातृवन्दना पत्रिका की सम्पादकीय टोली के प्रयासों से ही ''समरस समाज : सशक्त भारत'' विषय पर विशेषांक प्रकाशित किया गया है जिसमें विद्वान लेखकों ने समरसता विषय के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार

साझा किए हैं, जो पाठकों को अवश्य ही उद्वेलित करने में सहायक होंगे। मातृवन्दना पत्रिका के सम्पादक डॉ. दयानंद ने विशेषांक विमोचन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राज्यपाल आचार्य देवव्रत कार्यक्रम अध्यक्ष सेवानिवृत्त आई.जी. प्रदीप सरपाल और सभी अतिथियों का स्वागत किया। मातृवन्दना संस्थान के अध्यक्ष अजय सूद ने मुख्य अतिथि, कार्यक्रम अध्यक्ष व उपस्थित सभी अतिथियों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम में प्रांत सह संघचालक डॉ. वीर सिंह रांगड़ा, विभाग संघचालक श्री वीरेन्द्र सिपहिया सहित कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। ❖

8 अप्रैल वर्ष प्रतिपदा विक्रमी सम्वत् 2073 भारतीय नववर्ष के शुभ अवसर पर सिलाई प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर रोहड़ू (चड़गांव) में नगरीय समिति का गठन किया गया जिसमे श्रीमती सुनीता अध्यक्ष, सचिव श्री ज्ञान नेगी, प्रदीप कुमार, कालीराम व राजकुमार सदस्य चुने गए। कार्यक्रम में श्री निहाल चंद महामंत्री हिमाचल प्रांत और श्री राजकुमार जिला अध्यक्ष विशेष रूप से उपस्थित रहे।❖

सिलाई केन्द्र का पता: *सिलाई प्रशिक्षण केंद्र, नजदीक ब्लॉक, चढ़गांव, सम्पर्क सूत्र ज्ञान नेगी - 98168-84558, प्रकाश (जिला संगठन मंत्री) 98160-71123*

मिटाए जाएंगे गुलामी के चिन्ह

विश्व हिन्दू परिषद् ने प्रदेश सरकार से बाबा भीमराव अम्बेडकर की जयंती पर माँग की है कि हिमाचल में गुलामी का चिन्ह पीटर हॉफ का नाम महर्षि वाल्मीकि के नाम पर होना चाहिए। आजादी के बाद भी गुलामी के चिन्ह नाम आज भी हिमाचल में दिखाई दे रहे हैं। यह बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर ने कभी नही सोचा था कि स्वतन्त्रता के बाद भी यह नाम होंगे। जो देश आज़ाद होते हैं वह अपनी गुलामी की दास्तां को मिटा देते हैं और अपने पूर्वजों वह क्राँतिकारियों के नाम पर शहरों के नाम, स्मारक व पार्कों के नाम रखते हैं। हिमाचल में डल्हॉजी का नाम नेता जी सुभाषचंद्र बोस के नाम से होना चाहिए था पर सरकारें गुलामी की दास्तानें आज तक ओढ़ती रही हैं। नूरपुर का नाम वीर रामसिंह पठानिया नगर होना चाहिए था क्योंकि नूरजहां का हिमाचल से दूर-दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं था। फिर भी हम आज तक गुलामी की चादर ओढ़े हुए हैं। यह नाम हिमाचल के लोगों के मस्तक पर कलंक है। वीर राम सिंह पठानिया जिसने स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी वह सन् 1857 की क्राँति से पहले हिमाचल में स्वतन्त्रता के लिए बिगुल बजाने वाला योद्धा था। हिमाचल की सरकारों को अपने पूर्वजों को स्मरण कर उनके नाम से गुलामी के नामों को हटा कर उनके नाम से रखने चाहिए थे पर सरकार की इच्छा शक्ति कभी भी नही रही। वह

विकास की अंधी आंधी में अपने इतिहास को ही भूल गए। हरियाणा सरकार ने गुड़गांवा का नाम गुरुग्राम रखा है यह स्वागत योग्य और दृढ़ इच्छा शक्ति को दर्शाता है। पूर्व में गुरुग्राम ही गुड़गांवा का नाम था। विहिप लम्बे समय से सरकार से मांग करता रहा है कि पीटर हॉफ का नाम महर्षि वाल्मीकि सदन होना चाहिए। महर्षि वाल्मीकि ने ही मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को स्थापित कर जन जन के राम बनाने वाले ऋषि थे। अम्बेडकर जयंती समरसता का स्तम्भ बनेगी, हिन्दू हम सब एक इस परिभाषा को दर्शाएगी। इसलिए लाखों हिन्दुओं कि इच्छा के अनुरूप सरकार गुलामी के नाम हटाकर महापुरूषों के नाम व क्रान्तिकारियों के नाम से रखना चाहिए।❖

उत्तरः- जटायु, द्रौपदी, अठारह पुराणों में, वशिष्ठ, कमलजीत संधू, भास्कराचार्य, नासिक (महाराष्ट्र), श्रीगुरू जी (मा.स. गोलवलकर), भीमदेव (द्वितीय) सोलंकी, मास्टर अमीर चंद।

तपस्वी राजमाता
अहिल्याबाई होल्कर

भारत में जिन वीरांगनाओं का जीवन आदर्श, वीरता, त्याग तथा देशभक्ति के लिए सदा याद किया जाता है, उनमें रानी अहिल्याबाई होल्कर का नाम प्रमुख है। उनका जन्म 18 मई, सन् 1723 को औरंगाबाद, महाराष्ट्र के पाथरग्राम में एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था। इनके पिता माणिकोजी शिन्दे परम शिवभक्त थे। अत: यही संस्कार बालिका अहिल्या पर भी पड़े। यह क्षेत्र उन दिनों इन्दौर के राजा मल्हारराव होल्कर के राज्य में था। एक बार राजा उधर से निकल रहे थे। उन्होंने जब मंदिर में हो रही आरती का स्वर सुना, तो वे भी वहां रूक गए। उन्होंने देखा कि पुजारी के साथ-साथ एक बालिका भी पूर्ण मनोयोग से आरती कर रही है। इससे राजा बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने गांववालों से पूछकर उसके पिता को बुलाया और उनसे आग्रह किया कि वे उनकी बेटी को अपनी पुत्रवधू बनाना चाहते हैं। माणिकोजी भला क्या कहते, उन्होंने सिर झुका दिया।

इस प्रकार वह आठ वर्षीय बालिका इन्दौर के राजकुंवर खाण्डेराव की पत्नी बनकर राजमहलों में आ गई। इन्दौर में आकर भी अहिल्या पूजा एवं आराधना में रत रहती। कालान्तर में उन्हें दो पुत्री तथा एक पुत्र की प्राप्ति हुई, पर अचानक उनके पति खाण्डेराव किसी गम्भीर रोग से पीड़ित हो गए और सन् 1746 में उनका देहान्त हो गया। इस संकटकाल में रानी ने तपस्वी की भांति स्वेत वस्त्र धारणकर राजकाज चलाया। 'सादा जीवन उच्च विचार' की वे प्रतिमूर्ति बन गईं, पर कुछ समय बाद उनके पुत्र, पुत्री तथा पुत्रवधू का भी देहान्त हो गया। इस वज्राघात के बाद भी रानी अविचलित रहते हुए अपने कर्तव्य मार्ग पर डटी रहीं। ऐसे में पड़ोसी राजा पेशवा राघोबा ने भारी षड्यन्त्र रचा। उसने इन्दौर के दीवान गंगाधर यशवन्त चन्द्रचूड़ को अपने जाल में फंसाकर अचानक हमला बोल दिया। रानी ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने धैर्य न खोते हुए पेशवा को एक मार्मिक पत्र लिखा। रानी ने लिखा कि यदि इस युद्ध में आप जीतते हैं, तो एक विधवा को जीतकर आपकी कीर्ति नहीं बढ़ेगी और यदि किसी कारण से आपकी हार हुई, तो आपके मुख पर सदा के लिए कालिख पुत जाएगी। अन्त में उन्होंने यह भी लिखा कि मैं मृत्यु या युद्ध से भयभीत होने वाली नारी नहीं हूं। यद्यपि मुझे राज्य का कोई लोभ नहीं है, फिर भी मैं जीवन के अन्तिम क्षण तक महासंग्राम करूंगी। इस पत्र को पाकर पेशवा राघोबा चकित रह गया। इसमें जहां एक ओर रानी अहिल्याबाई ने उस पर कूटनीतिक चोट की थी, वहीं दूसरी ओर अपनी कठोर संकल्प शक्ति का परिचय भी दिया था। उसका मस्तक रानी के प्रति श्रद्धा से झुक गया और वह बिना युद्ध किए ही पीछे हट गया।

रानी के जीवन का लक्ष्य राज्यभोग तो था ही नहीं। वे तो जनता को अपनी सन्तान समझकर सेवा में लगी रहती थीं। उन्होंने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण राज्य और धर्म के उत्थान में लगाया। 13 अगस्त, सन् 1795 ई. को 72 वर्ष की आयु में उनका देहान्त हुआ। उनका जीवन धैर्य, साहस, सेवा, त्याग और कर्त्तव्यपालन का एक प्रेरक उदाहरण है। इसीलिए एकात्मता स्त्रोत के 11वें श्लोक में उन्हें झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, रानी चेन्नम्मा, रूद्रमाम्बा जैसी वीर नारियों के साथ याद किया जाता है।

'लक्ष्मीरहल्या चेन्नम्मा, रूद्रमाम्बा सुविक्रमा:
निवेदिता शारदा च, प्रणम्या मातृदेवता:।।'

❖साभार: हर दिन पावन

नासा में लगती है 15 दिन संस्कृत की कक्षा

अमरीकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा (नेशनल एयरोनॉटिक्स एण्ड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन) में भर्ती होने वाले वैज्ञानिक के प्रशिक्षण काल में 15 दिन की संस्कृत की कक्षा लगती है। इसमें आर्यभट्ट, वराहमिहिर जैसे भारत के विद्वानों की ओर से दिए गए वैज्ञानिक सिद्धांत के अलावा मय दानव का दिया सूर्य सिद्धांत पढ़ाया जाता है। सूर्य सिद्धांत में ढाई हजार वर्ष पहले सौरमण्डल के सम्बंध में दिए गए तथ्य और आज के वैज्ञानिक तथ्यों का तुलनात्मक अध्ययन होता है। नासा के अतिथि वैज्ञानिक, दिल्ली के डॉ. ओमप्रकाश पाण्डेय ने जोधपुर प्रवास के दौरान विशेष बातचीत में बताया कि भारत का खगोल विज्ञान इतना अधिक समृद्ध था कि उसे अब वेद और वेदांग के जरिए वैज्ञानिक सीख रहे हैं। मय दानव ने 500 बीसी में सूर्य सिद्धांत के जरिए बताया कि पृथ्वी अपनी धुरी के साथ सूर्य के चारों ओर भी चक्कर लगाती है। ब्रह्मगुप्त ने एक साल की अवधि 365.24 दिन बताई। वर्तमान वैज्ञानिक सिद्धांत के अनुसार इसमें केवल 1.4 सेकेण्ड की ही त्रुटि है। मय दानव ने बुध से लेकर सभी ग्रहों और पृथ्वी के अपने अक्ष पर झुके होने की जानकारी दी थी। ब्रह्मगुप्त का सिद्धांत, आर्यभट्ट और वराहमिहिर की लिखी पुस्तकों में भी है।❖ **साभार: शिक्षा उत्थान**

उज्जैन महाकुम्भ के लिए चार हजार किलो वजनी अगरबत्ती बनी

महाकाल की नगरी उज्जैन में महाकुम्भ के लिए वड़ोदरा के गो-भक्तों ने एक 121 फीट लम्बी अगरबत्ती बनाई है। इस अगरबत्ती की मोटाई 3 फीट 6 इंच तथा वजन चार हजार किलो है। इसके बनाने में 2,65,350 रू. खर्च हुए हैं तथा इसमें 45 किलो गाय का घी प्रयोग हुआ है। इस विशालकाय अगरबत्ती में लगी अन्य सामग्री इस प्रकार है- गाय का सूखा गोबर (छाणे)- 2100 कि.ग्रा., गोमूत्र- 500 लीटर, गाय का दूध 180 कि.ग्रा., दही 180 कि.ग्रा., गूगल-520 कि. तथा नारियल का चूरा- 500 कि.ग्रा.। गत 21 फरवरी को बड़ोदरा से इसकी शोभा-यात्रा निकाली गई। सड़क मार्ग से इसे उज्जैन ले जाया गया। 24 फरवरी को यह विशालकाय अगरबत्ती उदयपुर पहुंची। महाकुम्भ के प्रारम्भ अर्थात् मेष संक्रान्ति (13 अप्रैल) को इसे प्रज्ज्वलित किया गया।❖ **साभार: पाथेय कण**

शनि शिंगणापुर मंदिर में टूटी 400 साल पुरानी परंपरा

महाराष्ट्र के अहमद नगर के प्रसिद्ध शनि शिंगणापुर मंदिर में महिलाओं के पवित्र चबूतरे की पूजा नहीं करने की 400 साल पुरानी परंपरा शुक्रवार को टूट गई। शनि शिंगणापुर मंदिर ट्रस्ट द्वारा मंदिर के पवित्र स्थान पर पूजा करने की इजाजत मिलने के बाद शुक्रवार से महिलाओं ने वहां पूजा शुरू कर दी। सालों पुरानी परंपरा को तोड़ते हुए पहले दो महिलाओं ने वहां पूजा की। इसके बाद भू माता ब्रिगेड की अध्यक्ष तृप्ति देसाई ने चबूतरे में प्रवेश कर शनि की पूजा की। मंदिर की तरफ से किसी भी विवाद से बचने के लिए परंपरा को छोड़ने का ऐलान कर महिला व पुरूष दोनों को ही चबूतरे से दूर रखने का फैसला किया गया था। इस पर लोगों का कहना था कि गुड़ी पड़वा या नव वर्ष के मौके पर देवता को नहलाने की परंपरा का क्या होगा। इस बात को लेकर पहले ही अंदाजा लगाया जा रहा था कि कुछ लोग इस फैसले का विरोध कर मंदिर में घुसने की कोशिश कर सकते हैं।

यह अंदाजा सही साबित हुआ जब कुछ भक्त जबरदस्ती मंदिर परिसर में घुस आए और पवित्र स्थान पर पूजा की। गुड़ी पड़वा के अवसर पर अनुमान के अनुसार कुछ लोग बैरिकेड तोड़ते हुए पवित्र चबूतरे पर पहुंच गए और पूजा-अर्चना की। इसके बाद ट्रस्ट की ओर से सभी को पूजा करने की अनुमति देने का आदेश दिया गया। इस मामले में बांबे हाईकोर्ट की भूमिका भी अहम रही। कोर्ट ने कहा थ मंदिर में प्रवेश महिलाओं का मौलिक अधिकार है और राज्य की जिम्मेदारी है कि वह इस अधिकार की रक्षा करे। ❖

छत्तीसगढ़ का कांगेर वैली नेशनल पार्क है एशिया पहला बायोस्फियर

छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के कांगेर वैली नेशनल पार्क को राज्य के सबसे बड़े एथनिक पर्यटन के रूप में पहचान मिले 33 साल हो रहे हैं। दो सौ वर्ग किलोमीटर वाले हरे भरे जंगल को सन् 1982 में नेशनल पार्क का दर्जा मिला था। तब इस पार्क को देखने योग्य जगहों में भूमिगत कोटमसर गुफा और तीरथगढ़ जलप्रपात ही मुख्य थे। यहां के जंगल बारहों मास हरे भरे रहते हैं। कांगेर नदी के किनारे-किनारे इसके 14 कि.मी. वाले जंगलों को एशिया का पहला घोषित बायोस्फियर बताया जाता है। इस इलाके से लेकर आमाकरिया तक 100 नहीं 150 फीसदी प्राण वायु होने की बात वैज्ञानिक स्वीकार कर चुके हैं। पेड़-पत्थर और पानी की कहानी के कई कुदरती कमाल देखने टूरिस्ट सीजन में 60 से 70 हजार सैलानी यहां घूमने आते हैं। बताया जाता है कि कोटमसर की गुफाओं का निर्माण कम से कम 250 से 300 साल पुराना होगा। कांगेर वैली नेशनल पार्क की भूमिगत गुफाओं को देखने वालों में 90 फीसदी सैलानी कोटमसर की गुफा देखकर लौट जाते हैं। केवल 10 फीसदी सैलानी ही पार्क के कैलाश, दण्डक, देवगिरी, झुमरी, शीत गुफा और मादर कोन्टा की टेकरी में छिपी गुफा तक पहुंच पाते हैं। हालांकि पार्क प्रबंधन ने कैलाश गुफा दिखाने के पूरे इंतजाम किए हुए हैं। यहां पहुंचने के लिए जगदलपुर से मुरमा-मोदल होकर पार्क के नेतानार चेक पोस्ट से पहुंचना होता है। वहां घने जंगल के बीच घुमावदार रास्ते से होकर करीब 6 कि. मी. दूर कैलाश गुफा है। यह गुफा कोटमसर से इस मामले में अलग है कि कोटमसर की गुफा देखने जमीन के भीतर 60 फीट तक नीचे उतरना पड़ता है। जबकि कैलाश गुफा देखने वालों को टेकरी पर सीढ़ियों से चढ़ कर देखना होता है। यहां भी गाईड और उजाले के पूरे इंतजाम पार्क ने किए हुए हैं। बायोस्फियर इलाके में मौजूद पार्क की दंडक गुफा को आम सौलानियों से दूर रखा गया है। जिसका उद्देश्य शोध के जरिए नई जानकारियां जुटाना है। यह गुफा जमीन से काफी ऊपर टेकरी पर चढ़ने के बाद देखी जा सकती है।❖

कोई भी हिमाचली नहीं सोता भूखा, आर्थिक गणना रिपोर्ट में सामने आई प्रदेश की उज्ज्वल तस्वीर

छठी आर्थिक रिपोर्ट तैयार करने वाला हिमाचल प्रदेश देश का सबसे पहला राज्य बन गया है। हिमाचल प्रदेश ने मई 2015 में अपनी रिपोर्ट तैयार कर ली थी, जिस पर फरवरी 2013 में काम शुरू किया गया था। हालांकि अन्य राज्य रिपोर्ट तैयार नहीं कर पाए, जिस कारण केंद्र सरकार ने हिमाचल की रिपोर्ट भी जारी नहीं करने का कहा था। अब जबकि केंद्र की भी रिपोर्ट आने वाली है तो हिमाचल को भी रिपोर्ट जारी करने की मंजूरी मिल गई।

मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह द्वारा इस रिपोर्ट को पेश करने के बाद रविवार को आर्थिक गणना रिपोर्ट को मीडिया को जारी किया गया। अर्थ एवं सांख्यिकी विभाग के मुखिया व राज्य के आर्थिक सलाहकार प्रदीप चौहान ने बताया कि हिमाचल में पिछले छह-सात साल में न केवल रोजगारोन्मुखी संस्थान बढ़े हैं, बल्कि यहां पर रोजगार का आंकड़ा तेजी के साथ बढ़ा है। इस रिपोर्ट के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रदेश का कोई भी व्यक्ति भूखा नहीं सोता।❖ **साभार: दिव्य हिमाचल**

भूख व पाचन क्रिया बढ़ाने वाला मैंगल खान नमक

– शास्त्री दीनानाथ गौतम

हिमाचल प्रदेशी खनिजों में रेत, बजरी, पत्थर, कोयला, मढिया की माट्टी भी हमारे खनिज हैं, वहां मण्डी जनपदीय द्रंग, गुम्मा, मैगल नामक स्थानों पर काला नमक के भूमिगत भण्डार भी मौजूद हैं जिनका दोहन राजाओं के शासन काल में मजदूरी प्रथा के मुताबिक करवाया जाता रहा है और ब्रिटिश शासन काल में तो द्रंग, गुम्मा की नमक खानों का नमक निकाल कर इधर लाहौर, काबुल, गांधार तक तथा पर्वतीय क्षेत्र में लेह लद्दाख अथवा तिब्बत तक तो इधर उत्तराखण्ड के पहाड़ियों तक भेड़-बकरियों अथवा घोड़ों-खच्चरों पर लदवाकर समुदाय द्वारा बैलों की पीठ पर ही लादकर पहुंचाया जाता रहा है।

अत: स्वयं हिमाचल प्रदेश निवासी एवं जम्मू कश्मीर के लोग किलटों व पिठ्ठुओं द्वारा ढोते थे। गुम्मा और द्रंग में काला नमक अर्थात् पत्थर नमक की खानें भूमिगत हैं, जिनका पत्थर रंग में नीला-काला-सा होता है। यह नमक आदिकाल से भूमिगत सुरंगें बनाकर भीतर लकड़ी के ढांचे खड़े करके श्रमिकों द्वारा निकाला जाता था और दूर-दराज क्षेत्र तिब्बत से लेकर जम्मू-कश्मीर और सुदूर गढ़वाल-उतरांचल और पंजाब तक इन दोनों ही खानों से निकाल, हुआ नमक आदमी स्वयं पीठ मे उठाकर अथवा किल्टों में भरकर ले जाता था और श्रम भुगताकर निश्चित पैसा-टका-आना भी राजस्व का होता था। राजाओं व राणाओं को चुकता किया जाता था। जब औजार नहीं थे तो सुरंगों के भीतर चट्टानों पर पानी की निरंतर धार से गलाकर नमक के टुकड़े किए जाते थे।

पहले पाषाण औजारों और बाद में झब्बल एवं लोहे के घणों से तोड़ कर नमक खानों के मजदूर नमक निकाला करते थे। राजाओं व राणाओं के शासन काल में राजस्व का मालिक स्थानीय राजा और राणा ही थे, किंतु जब भारत स्वतंत्र हुआ, राजाओं के शासनकाल से मुक्त हुआ, तो भारत सरकार इन खानों की स्वामी बन गई तत्पश्चात भारत में द्रंग-गुम्मा-मैगल की खानों के लिए अथवा राजस्थान की भाम्भर झील से तथा खारोगाड्डा गुजरात साल्ट कंपनी बनाकर तीनों राज्यों के नमक उत्पादन के लिए मैसर्ज हिंदुस्तान साल्ट कंपनी बनाकर तीनों राज्यों के नमक उत्पादन के लिए एक कंपनी नियम बनाया और राजस्थान के जयपुर केंद्र में तीनों स्थलों का प्रशासन, नियमन, उत्पादन एवं राजस्व प्राप्त करने व भुगतान करने के लिए कंपनी को ही प्रत्याभूति के रूप में जनहित में सौंप दिया और राज्य सरकारों से कहा कि आवश्यकतानुसार रॉयल्टी देकर नमक निकाल सकते हैं। अत: यह हिंदुस्तान साल्ट उपक्रम अब इन नमकों के उत्पादन केंद्रों को देख रहा है किंतु कंपनी विस्तृत अध्ययन करने से लगता है कि अपने आपमें इन खानों के प्रबंधन करने में असफल रही है।

कारण भारत सरकार और राज्य सरकारों के मध्य कारगर ढंग से तालमेल न होना। उपर्युक्त तीनों स्थलों पर निकलने वाले नमक काला नमक भी कहलाता है। क्षेत्रीय पहाड़ी बोली में काठा नमक कहते हैं। लोग इसे सौर ऊर्जाओं से सूखाकर नमक नालों के आस-पास पत्थरों पर सूख जाने पर अथवा सर्दियों में जम जाने पर लोहे की दराटी-छुरी कशीद कर अपने घरों को ले जाते थे। यह सरकार व विभाग की तरफ से स्थानीय लोगों को नि:शुल्क मिला था किंतु न्यूल पारले और मैगल में दो जगह भूमि प्लांटों पर सुखाने के लिए सीमेंट एवं पक्की मिट्टी की क्यारिंया बनी हुई थीं, इनको मैसर्ज सॉल्ट लिमिटेड कंपनी स्वयं राज्य सरकारों को बेचती थी। अत: उपर्युक्त कंपनी को संचालन कार्यालय श्री माधोराय के साथ दमदमा भवन में राज दरबार मण्डी स्टेट की तरफ किराए पर अभी तक भी है। किंतु दोनों पत्थर खानों से जो नमक भूमिगत सुरंगें देकर पहले पाषाण औजारों व पानी की धार से निकाला जाता रहा है और बाद में लोहे के औजारों से और अब

हल्का-सा बारूद विस्फोट से नमक को निकाला जाता था। इन नमक खानों पर संसारपुर कांगड़ा के राजा और कुल्लू एवं भगाहल के राजाओं की नजरें भी लगी रहीं। अत: बहाना कोई और ढूंढकर हमले भी मण्डी राज्य पर समय-समय पर होते रहे और गुम्मा के राणा भी गुम्मा खान ही नहीं द्रंग खान पर भी अपना अधिकार समझते थे, इसीलिए त्र्यांबली तालाब की पूजा-अर्चना भी की थी और तालाब को बचाया भी था क्योंकि हुल्ल अर्थात् हूहलू गांव राजपूतों के गांवों में मण्डी के राजा रहे जालिम सेन का प्रवास स्थल रहा है।

द्रंग-गुम्मा-मैगल नमक खानों से निकलने वाला यह नमक सामान्य उपयोग के अलावा, पशु अर्थात् गाय-भैंस-भेड़-बकरियों के लिए प्रयोग होता था। आयुर्वेद विभाग द्वारा भूख बढ़ाने वाला पाचन क्रिया को ठीक रखने वाला नमक भी तैयार किया गया जो मुंह के छालों और गला खराबी को भी ठीक करता है। इस औषधीय नमक का महत्व इस पर्वतीय क्षेत्र के सभी राज्यों में प्रचलित था। यहां तक कि तिब्बत तक यह नमक पहुंचता था। यह घोड़ों, खच्चरों और बैंलों पर लाद कर ले जाया जाता था। मण्डी राज्य के लोग इस नमक को चूल्हे में गर्म करके नमक के लाल हो जाने पर पानी से भरे नलोसू (कुम्हार द्वारा बनाया गया मिट्टी के बर्तन) में डाल देते हैं तथा नमक मिट्टी के नलोसू से छान कर बाहर सफेद नमक के रूप में शुद्ध होकर आ जाता था जिसे चाकू छूरियों से कशीद कर रखा जाता था और भोजन आदि में प्रयोग किया जाता था। शील बात्तू पर भी खूब बारीक पीसकर इस नमक में लाल व काली मिर्च मिलाकर विविध व्यंजनों में भी प्रयोग किया जाता रहा है।

स्लेट शिलाओं पर पीसकर 'नलाटा' अर्थात् आटा दलिया में मिलाकर पशुओं को चटाया जाता था क्योंकि इस नमक के चटाने से पशुओं पर बीमारी का कुप्रभाव नहीं पड़ता था। मनुष्य के गले में टांसिल होने पर इस नमक के गरारे करने से गला ठीक हो जाता है। यदि पांव में मोच आ जाए अथवा हड्डियों के जोड़ों में दर्द जो जाए तो गर्म पानी की भाप ऊनी कपड़े के साथ इस नमक को लपेट करके दिया जाता था।❖

(लेखक द्रंग के पूर्व विधायक रहे हैं)

मेरी लाडली देश में अव्वल

मंडी प्रशासन द्वारा शुरू किया गया मेरी लाडली अभियान देश में अव्वल आंका गया है। भारत सरकार के 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' अभियान में मंडी जिला प्रशासन की इस पहल व प्रयासों को देशभर में सबसे अच्छी परफार्मैंस मानते हुए 19 अप्रैल को दिल्ली बुलाया गया, जहां इस अभियान के एक वर्ष पूरा होने पर बेहतर काम कर दिखाने वाले जिलों की ओर से प्रैजेंटेशन दी गई। खास बात यह है कि मंडी उन 61 जिलों की सूची में शामिल नहीं है, जहां प्रथम चरण में इसे शुरू किया गया था लेकिन बावजूद इसके डी.सी. मंडी संदीप कदम ने इस अभियान को यहां मेरी लाडली नाम देकर बिना केंद्र से बजट मिले ही बेहतर तरीके से जनता के बीच

पहुंचाया और सोशल मीडिया के माध्यम से इस कद्र बुलंदी तक पहुंचाया कि आज केंद्र सरकार ने मंडी जिला प्रशासन के कामों की सराहना करते हुए दिल्ली प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया, जहां पूरा देश मंडी जिला प्रशासन के उन प्रयासों व पहल का अनुसरण करेगा। ❖

कम्युनिस्ट एवं अम्बेडकर

- सुभाष चन्द्र सूद

सन नब्बे के दशक में कम्युनिष्टों के स्वर्ग साम्यवादी रूस के ध्वस्त होने से ही कम्युनिष्ट विचारधारा विश्व से तितर-वितर हो गई। चीन ने कम्युनिष्ट आवरण में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था अपना ली। भारतीय कम्युनिष्ट भी इससे अछूते न रहे। जैसे तैसे उन्होंने अपने कम्युनिष्ट गढ़ बंगाल और केरल को बचाये रखा। भला हो ममता बैनर्जी का उसने कम्युनिष्टों की ही कार्य शैली से बंगाल से कम्युनिष्टों का सफाया कर दिया। आज अपने में ही एक विचित्र गठजोड़ कर कांग्रेस और कम्युनिष्ट बंगाल में ममता बैनर्जी से लड़ रहे हैं तो केरल में अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे कम्युनिष्ट कांग्रेस से लड़ रहे हैं।

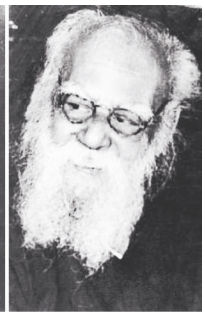

कम्युनिष्ट कभी अपने आदर्श मार्क्स, लेनिन, स्टॉलिन के बाद चीनी माओत्से तुंग, वियतनामी हो-ची-मिन्ह या क्यूबा के क्रांन्तिकारी ची क्वेरा का गुणगान करते थे। धीरे-धीरे उनकी प्रासंगकिता समाप्त होने पर उन्होंने अन्य हीरो खोजने शुरू किये। आज कम्युनिष्टों के पोस्टरों पर क्रान्तिकारी भगतसिंह और हाल ही में जेएनयू के घटनाक्रम के बाद उनका बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर के प्रति प्रेम उमड़ा है। जेएनयू के छात्र नेता कन्हैया का जय भीम का नारा उसी पैंतरा बदल शुतुर मुर्गी नीति का द्योतक है। सोनिया, राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस अपना नैतिक, वैचारिक आधार खो चुकी है अब कांग्रेस और कम्युनिष्ट एक दूसरे की लंगड़ी वैशाखी का प्रयोग कर रहे हैं।

हैदराबाद विश्वविद्यालय में हुई रोहित वेमुला की आत्महत्या को राजनैतिक रोटियां सेंकने के जुगाड़ में उन्होंने इसे स्वर्णिम अवसर मान कर दलितों पिछड़ों के उत्थान से जोड़ा। जेएनयू में घटित भारत को खंड़ित करने वाले नारों से उनका असली देशद्रोही चेहरा देश के सामने आया जिसकी प्रेस एवं जनमानस पर काफी प्रतिक्रिया हुई। कन्हैया और उमर खालिद के ''जय भीम'' के नारे, भूख-गरीबी से आजादी उसी पैंतरा बदल राजनीति का अंग है।

बाबा साहेब अम्बेडकर कम्युनिस्टों की अन्तर्राष्ट्रीय वैचारिक निष्ठा एवं मजदूर, दलित विरोधी नीतियों के सदा घोर आलोचक एवं उनके राजनैतिक प्रतिद्वन्दी रहे। 1942-46 में गर्वनर जनरल की लॉर्ड माउण्टबेटेन कार्यकारिणी में लेवर मेम्बर के रूप में निर्वाचित होकर उन्होंने मजदूरों के हित में इनके मज़दूर हित सम्बन्धी लेबर सुधार किये। स्वतंत्र लेबर पार्टी बनाकर कम्युनिष्टों से प्रत्यक्ष संघर्ष किया उनकी देश विरोधी, मजदूर विरोधी नीतियों का पर्दाफाश किया।

बाबा साहब अम्बेडकर का खुद को अनुयाई बताकर कम्युनिष्टों के साथ गठबंधन तालमेल की कोशिश भी उनके विचार के विरूद्ध है। बाबासाहब ने कम्युनिष्ट विचारधारा को एक ढकोसला बताया था। उन्होंने कहा था कि ''सवर्ण हिन्दुओं और कम्युनिष्टों के बीच गोलवलकर (संघ) एक अवरोध है उसी प्रकार परिताणित जातियों और कम्युनिष्टों के बीच अम्बेडकर अवरोध है।'' उनका मानना था कि दुनिया को गौतमबुद्ध एवं कॉर्ल मार्क्स के बीच एक का रास्ता चुनना होगा।

जेएनयू के कम्युनिष्टों ने अपने पाकिस्तान प्रेम का पर्दाफाश होते देखकर अचानक अम्बेडकर को आंतकवाद और अफजल गुरू के आगे खड़ा कर दिया । देशद्रोह को रोहित वेमुला एंगल देने का यह कम्युनिष्ट मास्टर स्ट्रोक है । बाबा साहब की थॉटस ऑन पाकिस्तान जैसी किताब पढ़कर कोई भी कम्युनिष्ट कभी अम्बेडकर का नाम नहीं ले सकता।❖

अद्वितीय ! अविस्मणीय !

''विश्व सांस्कृतिक महोत्सव'' दिल्ली

श्री श्री रविशंकर द्वारा दिलों को जोड़ने की अनूठी कला आर्ट ऑफ लिविंग द्वारा दिल्ली में यमुना के किनारे एक अद्‌भुत, अद्वितीय, अविस्मणीय तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक महोत्सव मनाया गया जिसमें दुनिया भर के 155 देशों के लाखों लोगों ने भाग लेकर विश्व में शान्ति और भाईचारे का संकल्प लिया। यह अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन आर्ट ऑफ लिविंग संस्था के 35 वर्ष पूरे होने पर आयोजित किया गया। ऐसा ही आयोजन 30 वर्ष पूर्व जर्मनी में भी सम्पन्न हुआ था।

आर्ट ऑफ लिविंग द्वारा आयोजित विश्व सांस्कृतिक महोत्सव का शुभारम्भ 11 मार्च को दिल्ली के यमुना तट पर श्री श्री रविशंकर के सान्निध्य में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किया गया। अपनी तरह के इस विलक्षण भव्य समारोह की शुरूआत वैदिक मंत्रोचार और सांस्कृतिक नृत्य से हुई, विद्वानों द्वारा यमुना किनारे विश्व शांन्ति और पर्यावरण से जुड़े वेदमन्त्रों का पाठ किया गया । श्री श्री रविशंकर ने विश्वभर से आये अपार जनसमूह का सम्बोधित करते हुए कहा कि ''जीवन जीने की कला एक सिद्धान्त है।'' एक संस्था से अधिक एक आन्दोलन है। जीवन में शक्ति, भक्ति, मुक्ति, युक्ति को प्राप्त करने के लिये एक प्रयास है। विश्व एक परिवार है, भारत में ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' यह हम एक सपना देखते रहें हैं, लग रहा है आज, क्रीड़ा (खेल), कला एवं नृत्यों द्वारा यह सपना साकार हो रहा है।

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने कहा भारत के पास जो अमूल्य सांस्कृतिक विरासत है, जिसकी तलाश दुनिया को है हम दुनिया को इन आवश्यकताओं को किसी न किसी रूप में पूरा कर सकते हैं। लेकिन यह तब हो सकता है जब हमें हमारी इस महान विरासत पर गर्व हो, अभिमान हो। मैं श्री श्री रविशंकर जी का अभिनन्दन करता हूँ कि 35 साल के छोटे से कार्यकाल का यह मिशन दुनिया के 150 से अधिक देशों में इसी ताकत के भरोसे अब फैल चुका है, उन देशों को अपना चुका है। महोत्सव के समापन पर तीन सांस्कृतिक विचारों आध्यात्म, योग और ध्यान से जुड़े 4600 कलाकारों ने 30 नृत्य प्रस्तुतियां प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया।

इस कार्यक्रम को सम्पन्न होने में दैवीय शक्तियों ने भी भयंकर परीक्षा ली। यकायक वर्षा होने से इन्द्र देवता का प्रकोप सभी को झेलना पड़ा। यमुना किनारे रेत और मिट्‌टी के दलदल में भाग ले रहे कलाकारों, प्रतिभागी जनता की भी परीक्षा की घड़ी रही जिसमें वे सकुशल उत्तीर्ण हुए। हिन्दुत्व एवं भारतीय सांस्कृतिक पुर्नजागरण का अभ्युदय होते देखकर इनके वामपंथी, पश्चिम परस्त लोगों एवं प्रेस मिडिया ने इसे पर्यावरण उल्लघंन का विषय बनाकर अदालतों मे खीचना चाहा, चर्चा का विषय बनाया परन्तु वे इसमें असफल रहे। इससे पूर्व केरल में भी एक नदी के किनारे ईसाइयों का धार्मिक सम्मेलन आयोजित हुआ था तव पर्यावरण उल्लघंन का शोर नहीं मचा था। भारतनिष्ठ, हिन्दुत्व निष्ठ कार्यक्रमों को ही ऐसे विवाद एवं नकारात्मक चर्चा का विषय क्यों बनाया जाता है। ऐसी आम जनता में राय बनती जा रही है। ❖

मेरे ईश (1)

ज्योतिर्मय निर्मल-निराले,
मेरे ईश सबके रखवाले।
त्रिलोक स्वामी कहाते हैं,
सर्वरक्षक भी बन जाते हैं।
सर्वज्ञाता-सर्वशक्तिमान,
इनसे बढ़कर कौन महान्?
अलख, अखण्ड व सुख-भण्डार,
होती इनकी जय-जयकार।
ज्ञान कला निधि-चेतन स्वरूप,
शीश नवाते रंक व भूप।
परमसुख के तो ये हैं धाम,
इनको मेरा शत-शत प्रणाम।
अनुपम पद व महिमा अपार,
सचमुच ये तो हैं निर्विकार।
निर्मल मन से जो ध्याते,
सहज भाव से ये मिल जाते।
ये तो हैं अमित तेजधारी,
लीला इनकी बड़ी न्यारी।
प्रकाश बांटते ये भरपूर,
कोई रहे न इनसे दूर।

मेक इन इंडिया

आपकी प्रतिभा अमूल्य है
विदेशों में मत लगाओ
अपनी प्रतिभा लगा कर
भारत में ही रह कर
इसका मान बढ़ाओ।
कभी अपने महापुरूषों ने,
नालन्दा तक्षशिला विश्वविद्यालय बनवाए,
शिक्षा के सारे गुण तकनीक समझाए,
ह्वेन्साग फाह्यान यहां
प्रशिक्षण ग्रहण करने को आए।
जिस चांद लोक के रहस्य,
अभी तक नहीं समझे,
पहले उन्हीं ने समझाए,
जिस हवाई जहाज की बात करते हैं,
उसी में बैठ राम अयोध्या आए।
क्यों अपनी बुद्धि पश्चिम देशों में लगाते हो
ऑस्ट्रेलिया इंग्लैंड पहुंच कर,
उनका ही मान बढ़ाते हो,
जन-जन के आह्वान पर
लौटो अपने देश धन बल भारत में लगाओ।
आपका जीवन अमूल्य है,
विदेशों में मत लगाओ,
अपनी प्रतिभा यहां लगा कर,
भारत को पुनः विश्व गुरू बनाओ।

धर्मपाल, नूरपुर

गुणकारी गऊ माता (2)

गाय माता कल्याणी है,
यह संतों की वाणी है।
दूध, दही, घी गुणकारी,
दूर करे सौ बीमारी।
मूत्र-गोबर रोग मिटाता,
सब रोगाणु दूर भगाता।
नित हो इसका पूजन-वन्दन,
करो इसका तुम अभिनन्दन।
इसकी सेवा जो कर जाए,
पुण्यभागी वह बन जाए।
जब-जब यह हुंकार भरे,
पापी भी तो सच खूब डरे।
लम्बी पूंछ जब यह हिलाती,
मक्खी-मच्छर दूर भगाती।
तैंतीस करोड़ बसते देव,
नित करो इसकी देख-रेख।
गौ-हत्या तो पातक भारी,
बनो न तुम पापाधिकारी।
करता इसकी जो है सेवा,
देती उसको यह है मेवा।

राम प्रसाद शर्मा, सिहाल, कांगड़ा

The touch of pink is the touch of health.

As we grow into a complete healthcare company, we work to bring people better lives and better futures with advanced healthcare products and services. From innovative contraceptives to hospital equipment, healthcare services and pharma products to public healthcare programs, we're doing all it takes to make every generation glow with the touch of pink, the touch of good health.

www.lifecarehll.com

HLL Lifecare Limited
Innovating for Healthy Generations

Contraceptives | Surgical and Hospital Products & Equipments | Medical Infrastructure Projects | Women's Health Care | Diagnostic Services | Vaccines
Rapid Test Kits | Natural Health Care Products | Procurement and Consultancy Services | Social and Health Care Franchising
Condom Promotion and AIDS Prevention Programs | Hospitals and Mobile Clinics | Public Health Program Implementation and Technical Support for NGO's

गले की बीमारियों के घरेलू उपाय

गला बैठना

* *शलजम को पानी में उबालकर पीने से गले की खराश मिट जाती है।*
* *अजवाइन और शक्कर उबालकर पीने से गला खुल जाता है।*
* *एक गिलास गर्म पानी में डेढ़ चम्मच शहद डालकर गरारा करने से बैठा गला ठीक हो जाता है।*
* *प्याज से रस में थोड़ी-सी शहद मिलाकर गुनगुने पानी के साथ लें।*
* *गुनगुने पानी में नीबू का रस निचोड़कर नमक मिलाकर गरारा करें।*
* *गर्म पानी में लहसुन का रस डालकर गरारा करें।*
* *10-12 तुलसी के पत्ते चबाने से आधे घंटे में ही आवाज खुल जाती है।*
* *मुलहठी और मिश्री को मुख में रखकर दिन में 3-4 बार चबाएं।*
* *सोंठ, पुदीना, दालचीनी और हरी चाय का काढ़ा बनाकर पीने से सर्दी में बैठा गला साफ हो जाएगा और कफ भी बाह आ जाएगा।*
* *हल्दी और गुड़ को मिलाकर गुनगुने पानी के साथ निगल जाएं।*

खांसी

* *1 से 2 ग्राम मुलहठी का चूर्ण 5 से 10 ग्राम तुलसी के रस में मिलाकर शहद के साथ चाटने से खांसी मं राहते मिलती है।*
* *4-5 लौंग को भूनकर तुलसी के पत्तों के साथ लेने से सभी प्रकार की खांसी में लाभ होता है।*
* *दो ग्राम काली मिर्च पाउडर एवं डेढ़ ग्राम मिश्री का चूर्ण मिलाकर दिन में तीन-चार बार एक-एक ग्राम की मात्रा में शहद के साथ चाटने से लाभ होता है।*
* *हल्दी के टुकड़े को घी में सेंककर रात को सोते समय मुंह में रखने से खांसी और कफ में फायदा होता है।*
* *अनार की सूखी छाल आधा तोला बारीक कूटकर, छानकर उसमें थोड़ा-सा कपूर मिलाएं। यह चूर्ण दिन में दो बार पानी के साथ मिलाकर पीने से भयंकर खांसी भी दूर होती है।*

टॉन्सिल

* *जलकुंभी की भस्म को सरसों के तेल में मिलाकर लेप करने से पूराने से पुराने टॉन्सिल की सूजन भी ठीक हो जाती है।*
* *सूखी अंजीर को पानी में उबालकर उसे अच्छी तरह मसल लें, फिर इसका लेप करें। इससे गले के भीतर की सूजन दूर होती है।*
* *केले के छिलके को निकालकर गले में बांधने से फायदा होता है।*
* *सरसों, सहिजन के बीज, सन के बीज, अलसी, जौ तथा मूली के बीज इन सभी को समान भाग में लेकर कांजी में पीसकर लेप बनाएं, टॉन्सिल के ऊपर इसका लेप करने से फायदा होता है।* ❖

साभार : शाश्वत राष्ट्रबोध

लंबा जीवन चाहिए तो खाइए सेब

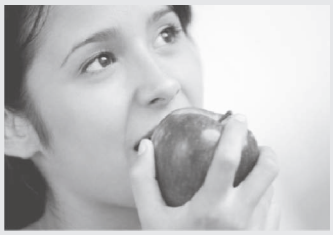

अगर आप लंबे समय तक जीवित रहने की ख्वाहिश रखते हैं, तो रोजाना सेब खाना शुरू कर दीजिए। हालिया शोध में पाया गया है कि रोजना एक सेब खाने से जल्द मौत का खतरा 35 फीसदी तक कम हो जाता है। ऑस्ट्रेलियाई शोधकर्ताओं के मुताबिक सेब में फ्लैनोइड्स, मैग्नीशियम, पोटाशियम और विटामिन सी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है, जो हमारे स्वास्थ्य को बेहतर रखता है। खासकर महिलाओं के लिए प्रतिदिन सेब खाना ज्यादा लाभदायक है। इसमें पाया जाने वाला एंटीऑक्सीडेंट हमारी कोशिकाओं को नष्ट होने से बचाता है और उम्र बढ़ जाती है। 15 सालों तक किए शोध में पाया गया कि सेब खाने से कैंसर का खतरा भी काफी हद तक कम हो जाता है। ❖

वदतु संस्कृतम् श्रीः जयतु भारतम्

संस्कृतभारती, हिमाचलप्रदेशः

' शारदाभवनम् ' नजदीक - रेलवे स्टेशन, पपरोला , जिला कांगडा हि.प्र. 176115
samskritabharati.hp@gmail.com

आत्मीयबन्धो !

संस्कृतशिक्षणस्य उत्तमाय अभ्यासाय, देवभूमौ हिमाचलप्रदेशे संस्कृतस्य प्रचारप्रसारस्य प्रशिक्षणाय च संस्कृतभारतीद्वारा मई मासे ग्रीष्मावकाशे अल्पावधिविस्तारकवर्गः आयोज्यते। वर्गेऽस्मिन् संस्कृतसम्भाषणस्य अभ्यासः, संस्कृतमाध्यमेन संस्कृतपाठनकौशलस्य प्रशिक्षणं, संस्कृतं समाजपर्यन्तं कथं नेतव्यम् एतस्य विषयस्य योजनाः करिष्यन्ते। अस्मिन् वर्गे ते एव छात्राः प्रवेशं प्राप्तुं शक्नुवन्ति ये कृतावासीयवर्गाः, सन्ति।

ये पूर्वं केनचित् कारणेन वर्गे भागं स्वीकर्तुं न शक्तवन्तः तेषां कृते अपि अस्मिन् वर्षे भाषाबोधनवर्गः, शिक्षकप्रशिक्षणवर्गश्च सार्धमेव आयोज्यते।

अल्पावधिविस्तारकवर्गः

अर्हता	अवधिः	शुल्कम्
नूतनाःछात्राः	14 मई 2016 सांयकालतः 31 मई 2016 पर्यन्तम्	1000/-
कृतावासीयवर्गाः	20 मई 2016 सांयकालतः 31 मई 2016 पर्यन्तम्	700/-
स्थानम् - शारदाभवनम्- पपरोला रेलवे स्थानकस्य निकटम्, जिला- कांगड़ा, हि.प्र.		

◆ वर्गसमाप्त्यानन्तरम् अल्पावधिविस्तारकरुपेण एकमासपर्यन्तं व विस्तारकरुपेण एकवर्षपर्यन्तं संस्कृतमातुः सेवां कर्तुम् अपि कश्चन अवसरः।

◆ स्थालिका , चषकः, टिप्पणीपुस्तिका, लेखनी, शयनाय आच्छदकम् , नित्योपयोगिनि वस्तूनि च सार्धम् आनयन्तु।

⊛ सूचनाः ⊛

- वर्गे भागं स्वीकर्तुं पूर्वपञ्जीकरणं वा 9418462710 क्रमाङ्के दूरवाणीं कृत्वा सूचना आवश्यकी।
- वर्गस्थाने सांयकालं 4:00 वादनपर्यन्तं प्राप्तव्यम्। • वर्गारम्भात् अन्तपर्यन्तं वर्गस्थाने एव स्थातव्यं भविष्यति।
- संस्कृतसम्भाषणाभ्यासः एकं तपः। वर्गे यदि जङ्गमदूरवाण्याः प्रयोगं कुर्मः तेन वातावरणं नष्टं भवति। अतः सर्वेण अपि गृहे सूचनां कृत्वा एव आगन्तव्यम्। यदि दूरवाणीम् आनयन्ति तर्हि वर्गस्थानकार्यालये एव स्थापनीया भविष्यति। अत्यावश्यकं सूचनादिनिमित्तं वर्गस्थाने दूरवाण्याः वैकल्पिकी सामूहिकी व्यवस्था भविष्यति।

वर्गस्थाने – • अखण्डसंस्कृतमयं वातावरणम् • साहित्यविक्रयणव्यवस्था।

सम्पर्कसूत्राणि

श्रीनरेन्द्रकुमारः प्रान्तसङ्घटनमन्त्री	डा.बृहस्पतिमिश्रः प्रान्तमन्त्री	डा.परमेशकुमारः प्रान्तशिक्षणप्रमुखः
94184-62710	97365-79594	09857876227

ऐसे जेएनयू पर भले लगे ताला

देशव्यापी बहस होनी चाहिए कि भारत के हम लोग क्या ऐसी शिक्षा, ऐसे शिक्षा संस्थान चाहते हैं जिसमें पढ़ाई, परिवेश से ऐसे संस्कार बनें जो ये नारे गुंजा दें कि भारत तेरे टुकड़े होंगे इंशा अल्लाह! इंशा अल्लाह! भारत की बरबादी तक, कश्मीर की आजादी तक, जंग करेंगे, जग करेंगे या यह कि कितने अफजल मारोगे, हर घर से अफजल निकलेगा! मुद्दा राष्ट्रद्रोह का ही नहीं है बल्कि उस आबोहवा का है जिसमें भारत राष्ट्रराज्य को बरबाद करने का काम इस तर्क में है कि अफजल गुरू और याकूब मेनन को फांसी बहुसंख्यकवाद यानि हिंदुओं को चाहने से हुई। यह दलील कि भगवा विचारधारा के चलते बहुसंख्यकवाद का उन्माद है। एक तरफ सेकुलर मीडिया इसका हल्ला कर मुस्लिम आबादी को भड़काता है तो दूसरी ओर वामपंथी, प्रगतिशील जमात में यह मूर्खतापूर्ण सोच होती है कि भारत के टुकड़े जैसे नारों से केन्द्र सरकार को पिलपिला साबित किया जा सकता है। न वह सख्ती कर सकेगी और न नरम रहेगी।

मौलाना अजहर जैसे हैं

हां, यह कहने में संकोच नहीं होना चाहिए कि जेएनयू और प्रेस क्लब में जिन लोगों ने भारत के टुकड़े होने को हुंकार मारी वे मौलाना अजहर से कम नहीं हैं। पाकिस्तान और उसके आतंकियों, आतंकी कैंपों से निपटना बाद की बात है। फिलहाल केंद्र सरकार, गृहमंत्री, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार सबका पहला काम यह होना चाहिए कि भारत के टुकड़े चाहने वालों को शिक्षा-दीक्षा देने वाले, उन्हें जहर उगलने की आजादी देने वाले जो भी सर्प संस्थान हैं उनकी या तो सफाई हो या उन्हें बंद किया जाए। यदि इस काम को भी केन्द्र सरकार नहीं कर सकती है तो पाकिस्तान से जहर उगलने वाले मौलाना अजहर को क्या खाक पकड़ सकेगी? जेएनयू कोई मदरसा नहीं है। मदरसे से यदि जेहादी, जुनूनी बनें तो विचार का अलग पहलू बनेगा लेकिन जेएनयू के कैंपस में, वहां की कथित वामपंथी बौद्धिक उर्वरता से यदि छात्र भारत के टुकड़े करने की वैचारिकता पा रहे हैं तो यह अधिक भयावह मामला है। इसलिए कि इनके साथ फिर हजार तरह के तर्क, झूठ और पाखंड जुड़ते हैं। याकूब मेमन, अफजल गुरू के नारों से लेकर भारत के टुकड़े की थीसिस के बौद्धिक प्रवर्तक देश के लिए ज्यादा बड़ा खतरा है। ये सुप्रीम कोर्ट के फैसले, भारत के राष्ट्रपति, मनमोहन सरकार सबको मजे से अफजल गुरू की फांसी में कलंकित कर देते हैं। मीडिया में स्पेस पा कर पूरे भारत राष्ट्र-राज्य को झूठा ठहरा देते हैं। इनकी बरगलाने, भड़काने की क्षमता भयावह है।

अखण्डता को चुनौती

हां, किसी भी कोण से देखा जाए भारत की बरबादी तक, कश्मीर की आजादी तक, जंग करने के नारे उस मनोदशा की अभिव्यक्ति है जिसमें भारत राष्ट्र-राज्य को बुनियादी तौर पर पिलपिला माना जाता है। पाकिस्तान के आतंकी संगठनों के चेहरे भी ऐसे ही सोचते और बोलते हैं तो जेएनयू के कथित प्रगतिशील, वामपंथी छात्र भी नारे लगाते हुए यही चैलेंज देते हैं कि तुम पिलपिलों में दम क्या है, उन्होंने जेएनयू के उपकुलपति को मजबूर किया कि कैंपस में राष्ट्रद्रोही नारे गूंजें। ध्यान रहे- अफजल गुरू को फांसी देने की तीसरी बरसी के कार्यक्रम की वीसी ने अनुमति नहीं दी। तब छात्र संघ अड़ा। उसने स्टैंड लिया कि कौन होता है वीसी इसे रोकने वाला। क्या दुनिया का कोई देश अपने ही विश्वविद्यालय में खुलेआम देश की अखंडता को चुनौती देने देगा?यदि ये प्रोफेसर, छात्र ऐसी ही आजादी चाहते हैं तो केंद्र सरकार को ऐसे संस्थान पर सचमुच ताले लगा देने चाहिए। खर्च देना बंद कर देना चाहिए। मसला भारत राष्ट्र-राज्य, उसकी एकता-अखंडता और उसकी व्यवस्था को ठेंगा बताने का है। सुप्रीम कोर्ट, न्यायपालिका के फांसी के निर्णय को झूठा करार देने का है। ये लोग गौमांस उत्सव कर हिंदुओं की आस्था को भड़काते हैं। ये अफजल गुरू का महिमा मंडन कर ललकारते हैं कि हिम्मत हो तो कुछ करो।

सहन नहीं किया जा सकता

ऐसी हिमाकत के अड्डे के नाते जेएनयू पर अब इस देश को सोचना होगा कि इससे कैसे सख्ती से पेश आया जाए। दुनिया में कहीं ऐसी शैक्षणिक आजादी नहीं है

कि आप जिस राष्ट्र-राज्य का अंग हैं उसके अंग-भंग या कि टुकड़े करने के नारे लगाने का बौद्धिक विमर्श करें। जेएनयू के छात्रसंघ ने, वामपंथी छात्र संगठन ने देश विरोधियों को जो मौका दिया है, जैसी उनकी हौसला बुलंदी की है, जैसे उनके पक्ष में खड़े हुए हैं उससे ये समान रूप से उतने ही दोषी हैं जितने भारत के टुकड़े के नारे लगाने वाले हैं। ये अब इधर-उधर की बात करके इस दलील के साथ भाग रहे हैं कि हम नारों की भर्त्सना करते हैं लेकिन बहस की, असहमति की आजादी हो। पर नारे असहमति वाले नहीं बल्कि देश के टुकड़े चाहने की मंशा लिए हैं। बतौर साक्ष्य वीडियो मौजूद हैं। भारत के किसी विश्वविद्यालय, कॉलेज या किसी संस्थान में यदि शैक्षिक आजादी के नाम पर भारत को तोड़ने की सोच के परिवेश की हकीकत बनती है तो उसे सहन नहीं किया जा सकता। याद रहे भारत के दो टुकड़े की थीसिस एक विश्वविद्यालय अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के कुछ छात्रों ने ही दी थी। क्या वैसी ही थीसिस जेएनयू, प्रेस क्लब में गूंजे इन नारों से नहीं झलकी है। ❖ साभार: पाथेय कण

परमाणु हथियार मुक्त दुनिया आसान नहीं

परमाणु हथियार विहीन दुनिया का सपना आसान नहीं लगता। अमेरिका में जुटे 60 देशों के प्रतिनिधियों के परमाणु सुरक्षा सम्मेलन के दौरान ही उत्तर कोरिया के मिसाइल परीक्षण तथा पाकिस्तान और रूस के रूख के चलते सम्मेलन का लक्ष्य भटक गया। अमेरिका समेत दुनिया के किसी भी देश के मुकाबले रूस के पास कहीं ज्यादा परमाणु हथियार हैं। रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमिर पुतिन के इस सम्मेलन के बहिष्कार करने के फैसले से परमाणु आतंकवाद का खतरा और बढ़ गया है। वहीं पाकिस्तान के भी सम्मेलन के नदारद होने से इसके औचित्य पर सवाल खड़े हो गए हैं। सम्मेलन में आईएस के खतरों पर विमर्श के लिए अलग से सत्र जरूर रखा गया है। फिर भी इससे निपटने में बड़े देशों के बीच प्रतिबद्धता की कमी देखने को मिल रही है। परमाणु शस्त्रविहीन दुनिया के सपने को उत्तर कोरिया से सबसे ज्यादा खतरा लग रहा है। वह कहते हैं कि इन परिस्थितियों में लगता नहीं है कि एनएसएस 2016 इन परेशान करने वाली चीजों पर चिंता कर पाएगा। सम्मेलन का लक्ष्य दूर की कौड़ी लगता है।

उत्तर कोरिया लगातार परमाणु परीक्षण करने से बाज नहीं आ रहा है। रूस के अधिकारी खुलेआम यूरोप पर परमाणु हमले की बात कर रहे हैं। साथ ही कम्प्यूटर हैकरों द्वारा परमाणु हथियारों पर साइबर हमले बढ़ गए हैं। सबसे ज्यादा चिंताजनक यह है कि बेल्जियम की मीडिया रिपोर्ट में दावा किया गया है कि ब्रुसेल्स धमाकों को अंजाम

देने वाले आतंकवादियों ने परमाणु ऊर्जा संयंत्र पर हमलों की योजना बनाई थी। अमेरिका सहित कई देशों की सरकारी रिपोर्टों के मुताबिक, यदि आईएस जैसे चरमपंथी समूह उच्च संवर्धित यूरेनियम और प्लूटोनियम तक पहुंच बनाने में कामयाब हो जाते हैं, तो वे अपरिष्कृत ही सही लेकिन घातक परमाणु बम बना सकते हैं।

तकनीक की चोरी का गुनहगार पाक अमेरिका में हो रहे चौथे परमाणु सुरक्षा सम्मेलन में प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को भी हिस्सा लेना था लेकिन लाहौर में हुए बम धमाकों के बाद उन्होंने इस सम्मेलन में नहीं जाने का फैसला लिया। परमाणु संधि पर दस्तखत को लेकर पाकिस्तान हमेशा आनाकानी करता रहता है। पाकिस्तान की भूमिका पर उसके ही वैज्ञानिकों की करतूत पर सवाल उठते रहे हैं। अब एटमी हथियारों को देश से बाहर जाने से रोकने की संधि पर दस्तखत की बारी आई तो पाकिस्तान ने 10 साल से ज्यादा का वक्त लगाया। परमाणु तकनीक को चोरी-छिपे फैलाने के काले कारोबार का सबसे बड़ा गुनहगार पाकिस्तान है।❖ साभार: उमर उजाला

समाज हित पत्रकारिता का परम धर्म

- प्रो. बृज किशोर कुठियाला

पुराणों में वर्णित विभिन्न ऐतिहासिक कथाओं में श्रेष्ठ मुनि नारद की भूमिका नवीनतम सूचनाओं के कुशल संवाहक व प्रभावी उपदेष्टा के रूप में सहज ही उभरती है। वर्तमान में जब सम्पूर्ण मानव जाति एक ओर सूचना क्रान्ति का आनन्द लेती प्रतीत होती है तो दूसरी ओर यह भी कटु सत्य है कि मीडिया आधारित सामाजिक संवाद दुख, निराशा और विवादों का जनक व संवाहक भी स्पष्ट तौर से दिखता है। पत्रकारों व मीडिया कर्मियों के कार्यों, कर्तव्यों, दायित्वों व मर्यादाओं की चर्चाएं अनेक होती हैं पर अक्सर परिणाम मूलक नहीं रहतीं। शहद तो सभी निकालना चाहते हैं परन्तु मधुमक्खियों के छत्ते में हाथ डालने की हिम्मत तो किसी में नहीं होती। वर्षों के प्रयासों के बावजूद न तो मीडिया अपनी आचार-संहिता बना सका न ही समाज या शासन इस कार्य को कर सका।

समाचारों के कारोबार में केवल तथ्य, पूर्ण तथ्य और पुष्ट तथ्य ही समाविष्ट होने चाहिए। अपनी बनावटी कार्यकुशलता को सिद्ध करने के लिए अधपके समाचार देना समाजद्रोह है। सत्यं वद ही पत्रकारिता का मर्म है।

पत्रकारिता के शिक्षण व प्रशिक्षण संस्थान भी असमंजस में हैं कि भविष्य के पत्रकारों को आदर्श व्यवहारिकता सिखाई जाए या तुरन्त सफलता प्राप्त करने के लिए सिद्धान्त विहीन शिक्षण दिया जाए। मीडिया के आदर्श व्यक्तित्वों के बारे में बड़ी ऊहापोह की स्थिति है। माखनलाल जी, पराडकर जी, गणेश शंकर जी जैसे रोल मॉडल हों या राडिया कांड में लिप्त वर्तमान के विख्यात-कुख्यात 'एक्टिविस्ट' पत्रकार। आज की भारतीय पत्रकारिता मुख्यत: उस अमेरिकी संवाददाता का अनुसरण कर रही है जिसकी रिर्पोटिंग से श्वेत-स्याह जातीय दंगे फैले और सौ के लगभग हत्याएं हुईं। न्यायालय में उसका वक्तव्य था कि पत्रकार होने के नाते उसका कर्तव्य सत्य को ढूंढना और उसको रिपोर्ट करना है। परिणामों के विषय पर पूछने पर उसने कहा कि उसकी रिपोर्टिंग से समाज में क्या होता है उससे उसका कोई लेना देना नहीं है।

इस असमंजस की स्थिति में मानव-हित का कोई दर्शन या सिद्धान्त ढूंढते हैं तो बरबस नारद का चरित्र सामने आ जाता है। नारद का कार्य भी आज के पत्रकारों की तरह समाचारों के संकलन और उनके सम्प्रेषण का ही था। हालांकि यह उनका व्यवसाय नहीं था फिर भी जीवन भर उन्होंने यही कार्य किया। नारद की विभिन्न कथाओं से एक बड़ा तथ्य यह निकल कर आता है कि वे समाज के हर वर्ग में स्वीकार्य थे, इतना ही नहीं हर समूह में वे सम्माननीय भी थे। उस समय सत्ता के तीन केन्द्र थे। देवता, मानव और दानव। तीनों का अपना-अपना संसार था, साथ ही आपसी सम्बन्ध भी थे, कभी प्रेम सद्भाव के, तो कभी ईष्या, घृणा के और कभी-कभी तो प्रत्यक्ष युद्ध के। हर परिस्थिति में नारद के लिए सभी सहज उपलब्ध थे। इन्द्र से लेकर ब्रह्मा, हिरण्यकश्यप से कंस तक के पास नारद कभी भी बिना अनुमति, बिना घोषणा के आ जा सकते थे। ऐसे ही सहज पहुंच उनकी सभी मानव नरेशों में थी।

कहीं भी जब नारद अचानक प्रकट हो जाते थे तो होस्ट की क्या अपेक्षा होती थी? हर कोई, देवता, मानव या दानव उनसे कोई व्यापारिक या कूटनीतिक वार्ता की उम्मीद नहीं करते थे। नारद तो समाचार ही लेकर आते थे। ऐसा संदर्भ नहीं आता जब नारद औपचारिकता निभाने या 'कर्टसी विजिट' के लिए कहीं गए हों। पहली बात तो यह कि समाचारों का संवाहन ही नारद के जीवन का मुख्य कार्य था, इसलिए उन्हें आदि पत्रकार मानने में कोई संदेह नहीं है। आज के संदर्भ में इसे हम पत्रकारिता का उद्देश्य मान सकते हैं।❖

परन्तु नारद के द्वारा दिए गए समाचार की क्या विशेषता थी? सौ प्रतिशत विश्वसनीय। किसी ने, कभी भी नारद के समाचार पर प्रश्न चिन्ह नहीं लगाया। क्योंकि अनुभव के आधार पर सबके मन में नारद पर अटूट विश्वास बन गया था। प्रवृत्ति तो ऐसी होती है कि मन को प्रिय लगने वाली सूचना यदि असत्य भी हो तो भी मानने का मन करता है, परन्तु अप्रिय घटना की सूचना वास्तविक होने पर भी मन में शंकाएं उत्पन्न करती हैं। नारद का वैशिष्ट्य निरन्तर यह रहा कि किसी ने उनसे पलट कर यह भी नहीं पूछा कि ''नारद, क्या तुम सत्य बोल रहे हो''। सूचनाओं का पूर्ण रूप से तथ्यात्मक व पुष्ट होना पत्रकारिता का मर्म माना जा सकता है। 'ब्रेकिंग न्यूज' की बनावटी दौड़ में मनगढंत, अपुष्ट, अधूरी व अर्धसत्य प्रसारित करना केवल भद्दी पत्रकारिता ही नहीं है, यह तो अपराध की श्रेणी में आना चाहिए। नैतिकता के नाते यह व्यक्ति और संस्था द्वारा किया पाप है।

समाचारों के संवाहक के रूप में नारद की सर्वाधिक विशेषता है उनका समाज हितकारी होना। नारद के किसी भी संवाद ने देश या समाज का अहित नहीं किया। कुछ संदर्भ ऐसे आते जरूर हैं जिनमें लगता है कि नारद चुगली कर रहे हैं, कलह पैदा कर रहे हैं। परन्तु जब उस संवाद का दीर्घकालीन परिणाम देखते हैं तो अन्ततोगत्वा वह किसी न किसी तरह सकारात्मक परिवर्तन ही लाते हैं। इसलिए मुनि नारद को विश्व का सर्वाधिक कुशल लोकसंचारक मानते हुए पत्रकारिता का तीसरा महत्वपूर्ण सिद्धान्त प्रतिपादित किया जा सकता है कि पत्रकारिता का धर्म समाज हित ही है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि :

1. वर्तमान के जनमाध्यमों के संदर्भ में मुनि नारद को न केवल आदि पत्रकार मानना चाहिए परन्तु उन्हें सर्वश्रेष्ठ लोकसंचारक के आदर्श के रूप में भी नई पीढ़ी के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहिए।
2. पत्रकारिता का एकमात्र उद्देश्य या कार्य सूचनाओं का सम्प्रेषण है, इसमें राजनीति, व्यापार, समर्थन या विरोध का समावेश अवांछनीय है।
3. समाचारों के कारोबार में केवल तथ्य, पूर्ण तथ्य और पुष्ट तथ्य ही समाविष्ट होने चाहिए। अपनी बनावटी कार्यकुशलता को सिद्ध करने के लिए अधपके समाचार देना समाजद्रोह है। सत्यं वद ही पत्रकारिता का मर्म है।
4. ऐसे समाचार या विचार जो समाज में नफरत, बैर भाव और निराशा फैला सकते हों उनका सम्प्रेषण नहीं होना चाहिए। अत: समाज का हित और विकास ही पत्रकारिता का धर्म है।❖

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति हैं)

Dr. Hem Raj Sharma

Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)

Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh

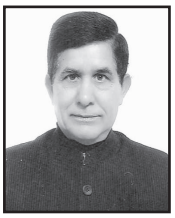

NATIONAL CHIKITSAK GURU
RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.

B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वेसन्तु निरामयाः"

JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre

Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

सऊदी अरब की सरज़मीं पर गूंजा भारत माता की जय का नारा

देश में भले ही भारत माता की जय पर विवाद चल रहा हो, मगर मुस्लिमों के सबसे पवित्र धार्मिक स्थल वाले देश सऊदी अरब की धरती पर भारतमाता की जय के नारे लगे हैं। दिलचस्प बात यह है कि ये नारे मुस्लिम महिलाओं ने उस वक्त लगाए जब पीएम मोदी टीसीएस के एक सेंटर पर पहुंचे। टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) के ऑल वूमन आईटी और आईटीईएस के मंच पर जैसे ही मोदी पहुचे, वहां काम कर रही महिलाओं ने बुलंद आवाज में 'भारत माता की जय' के नारे लगाए। नारे लगाने वाली महिलाओं में ज्यादातर मुस्लिम थीं, जिन्होंने बुर्का पहन रखा था। ये नारे उस वक्त लगे हैं, जब देश में कई मुस्लिम संस्थाओं ने फतवा जारी करके कहा है कि 'भारत माता की जय' बोलना इस्लाम के खिलाफ है।

टीसीएस में महिला कर्मचारियों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आप लोग सऊदी अरब की शान हैं। आपकी ओर पूरी दुनिया की निगाहें हैं और आपकी कामयाबियों का बखान कर रही हैं। मोदी ने महिला कर्मचारियों को भारत आने का न्यौता भी दिया। मोदी ने एक बार फिर आतंकवाद को मानवता का दुश्मन करार देते हुए कहा है कि धर्म को आतंकवाद से अलग करना होगा।❖ **साभार: अमर उजाला**

इरान वासियों को योग सिखा रहे हैं श्री फरशाद

इरान के शिराज शहर निवासी श्री फरशाद नजरई अपने देशवासियों को योग और ध्यान का प्रशिक्षण दे रहे हैं। श्री फरशाद पिछले सात साल से यह काम रहे रहे हैं। वे इरान में भारतीय योग पर अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला भी करा चुके हैं। योग के प्रति श्री फरशाद की बचपन से ही गहरी आस्था थी। इसी आस्था के चलते फरशाद भारत आए। उन्होंने किसी विश्वविद्यालय से इस विद्या का प्रशिक्षण लेने का विचार बनाया। वर्ष 2007 में हरिद्वार स्थित देव संस्कृति विश्वविद्यालय में उन्होंने प्रवेश लिया। अध्ययनकाल में वे शाकाहारी रहे। विश्वविद्यालय द्वारा तय पोशाक 'पाजामा-कुर्ता' भी पहना।

दो सालों में वे यौगिक विज्ञान विषय से स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त कर अपने देश इरान लौट गए। तभी से फरशाद इरान के कई शहरों में योग की कक्षाएं लगा रहे हैं। इन कक्षाओं में 'वीडियो एनिमेशन' के माध्यम से भी इस भारतीय विद्या के महत्व को बताया जाता है। श्री फरशाद बताते हैं कि प्रारंभ में योग सीखने वाले लोगों की संख्या बहुत कम थी। प्रारम्भ में उन्हें कट्टरपंथियों के विरोध का सामना भी करना पड़ा। पर वे धमकियों से घबराए नहीं और अपने कार्य में लगे रहे। समय गुजरने के साथ हालात सामान्य होते चले गए। जो लोग विरोध कर रहे थे उनमें से कई खुद फरशाद की कक्षाओं में आने लगे हैं। अब तो संख्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। श्री फरशाद की मान्यता है कि केवल भारतीय संस्कृति ही विश्व को शांति एवं सम्पन्नता दे सकती है। इसलिए भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने की आवश्यकता है। इसका सबसे अच्छा माध्यम भारतीय योग और ध्यान हैं, जिसकी आज दुनिया में सबसे ज्यादा आवश्यकता है।❖ ***साभार: पाथेय कण***

पेरिस व ब्रुसेल्स के सबक

बैल्जियम एक सुंदर यूरोपीय देश है, जहां यूरोपीय संघ की राजधानी भी है और दुनिया में हीरों के व्यापार का बड़ा केन्द्र एंटवर्प भी ब्रुसेल्स से एक घंटे के रास्ते पर है। वहां की अर्थव्यवस्था यूरोपीय दृष्टि से धीमी चल रही है लेकिन प्रति व्यक्ति आय 47,000 डॉलर तथा न्यूनतम वेतन 1500 यूरो प्रतिमाह है। यह यूरोपीय संघ का सबसे छोटा देश होने के बावजूद आबादी की दृष्टि से 1.10 करोड़ की जनसंख्या वाला देश है, जहां नाटो का सैन्य मुख्यालय भी स्थित है। लेकिन यह यूरोप की उसी मनोदशा का प्रतीक भी बन गया है जहां विलासिता और ऐश्वर्य की अधिकता के कारण साहस और साहित्य के क्षेत्र में निरंतर गिरावट आई और नोबेल शांति पुरस्कार विजेता सर विद्यासागर नायपॉल को लिखना पड़ा कि यूरोप आत्मिक मृत्यु की ओर बढ़ रहा है जहां धन की अतिशयता ने मन के उत्सव को समाप्त कर दिया है।

इस पृष्ठभूमि में पेरिस के बाद ब्रुसेल्स में आईएसआईएस का बम विस्फोट आश्चर्यजनक नहीं। हर छोटे-बड़े काम के लिए यहां पाकिस्तान, बांग्लादेश, अल्जीरिया, मोरक्को तथा अन्य अरब देशों से बड़ी संख्या में नागरिक आकर बस गए हैं। जैसे भारत में बांग्लादेशी सस्ती दिहाड़ी पर ज्यादा काम कर एवं प्राय: सभी राजनीतिक दलों के सदस्य बनकर अपना रक्षाकवच खरीद लेते हैं, वैसे ही यूरोप में ये मुस्लिम युवा यूरोपीय समाज की सामान्य आवश्यकताओं को पूरा करने वाले मददगार बनकर उन्हें अपने विरूद्ध कार्रवाई से थोड़ा ढीला बना देते हैं। 'न्यूयार्क टाइम्स' में रूक्मणी कालीमाची की जिहाद और यूरोप के संबंध में आंखें खोलने वाली खोजी रपटें छपी हैं। उन्होंने बताया कि यूरोप में आईएसआईएस यूरोपीय सरकारों द्वारा दी गई फिरौती की बड़ी राशियों के आधार पर ही फलफूल रहा है। कुछ महीने पहले जब इस्लामी आतंकवादियों ने 32 यूरोपीय नागरिकों को बंधक बना लिया था तो जर्मनी ने उन्हें छुड़ाने के लिए 50 लाख यूरो की राशि खुफिया तरीके से अफ्रीकी देश माली के राष्ट्रपति की मदद से सहारा क्षेत्र में बैठे अलकायदा मुखियाओं को पहुंचाई थी। वास्तव में पूरे विश्व में यूरोपीय नागरिकों का अपहरण कर फिरौती में लाखों डॉलर तथा यूरो लेना अलकायदा तथा आईएसआईएस का प्रिय खेल बन गया है। उसने सन् 2008 में 1.25 करोड़ अमेरिकी डॉलर फिरौती राशि के रूप में प्राप्त किए। सिर्फ यूरोपीय सरकारें ही फिरौती की राशि देने के लिए तैयार होती हैं हालांकि इन देशों में से ऑस्ट्रिया, फ्रांस, जर्मनी, इटली और स्विट्जरलैंड ने ऐसा करने से इनकार किया है। सन् 2012 में अमेरिका के उप वित्त मंत्री डेविड कोहिन ने अपने वक्तव्य में कहा था कि फिरौतियों के लिए अपहरण करना आतंकवादियों की वित्त व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। सन् 2003 में प्रति अपहृत नागरिक के लिए इस्लामी आतंकवादी दो लाख डॉलर मांगते थे, अब यह राशि प्रति नागरिक एक करोड़ डॉलर तक पहुंच गई है।

ब्रुसेल्स में भयानक बम विस्फोट और 30 से ज्यादा लोगों की मृत्यु के बावजूद भारत के राजनीतिक दल और अफजल गुरू के लिए चिराग जलाने वाले आईएसआईएस के विरूद्ध एकजुट निर्णायक कार्रवाई की मांग करने से वैसे ही पीछे हटे जैसे यूरोप की सरकारें। इन जिहादी हमलों का सबसे बड़ा निशाना होने के नाते भारत को यह तय करना होगा कि वह कब तक निर्णायक प्रहार के लिए प्रतीक्षा करेगा। जो लोग भारत माता की जय तथा वंदेमातरम् के प्रति अनास्था दिखाते हुए संविधान और लोकतंत्र पर हमला करते हैं, वास्तव में जिहाद के अलकायदा और आईएसआईएस वाले संस्करणों के रक्षाकवच ऐसे ही तत्व बनते हैं। लोकतंत्र, संविधान, उदारवाद एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता उन लोगों के लिए होती है जो इन मूल्यों को जीते हैं। सभ्य समाज के ये विशेष उपहार उन बर्बर संगठनों के लिए नहीं होने चाहिए जिनका एकमात्र उद्देश्य हिंसा और घृणा के माध्यम से अव्यवस्था फैलाना एवं मजहबी दहशत का वातावरण बनाना है। केरल से लेकर छत्तीसगढ़ तक माओवादी आतंकवाद उसी तरह जड़ें जमा रहा है जैसे यूरोप में आईएसआईएस। वास्तव में दोनों वैचारिक दृष्टि से भले ही भिन्न हों लेकिन परिणाम की दृष्टि से सहोदर ही हैं। माओवादी और इस्लामिक आतंकवाद एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। पेरिस और ब्रुसेल्स के भारत के लिए विशेष सबक होने चाहिए। मुस्लिम समाज को अलग-थलग किए बिना उनमें विद्यमान सकारात्मक सोच के नेताओं को इस बर्बरता के विरूद्ध आगे लाना होगा और मजहबी विखंडनवादी ताकतों को परास्त करते हुए भारतीयता के सर्वसमावेशी तिरंगे की आन-बान-शान बनाए रखनी होगी। मोहम्मद बिन कासिम से आज तक इन आतंकवादी जिहादियों को भारत ने मिट्टी में मिलाया है। यह स्मृति बनाए रखते हुए भारतीय धरा से हर किस्म के आतंकवाद का अंत करने का वक्त आ गया है। ❖

प्रेरणास्रोत बना कान्हा गौ-संवर्धन केन्द्र का उद्घाटन

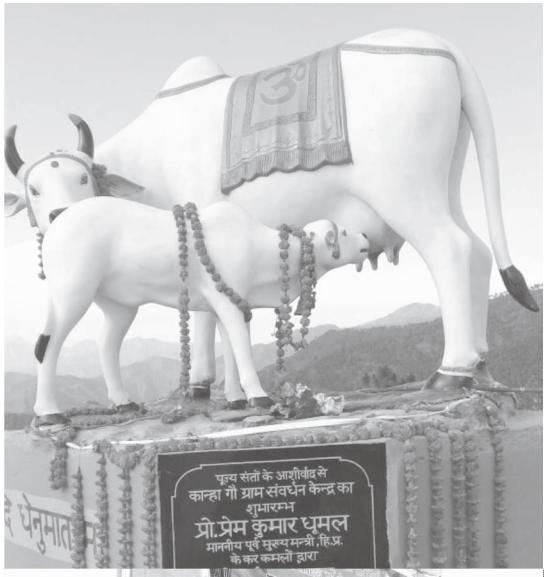

कान्हा गौ संवर्धन केन्द्र का उद्घाटन 15 अप्रैल को मण्डी के चौकी मंझवाड़ नामक स्थान पर मुख्य अतिथियों एवं क्षेत्र के गणमान्यों की उपस्थितति में विधिवत् रूप से हो गया। इस अवसर पर कर्नल रूपचन्द जी ने कहा कि गो के प्रति समाज को जागृत करने का कार्य यह केन्द्र करेगा। प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने इस अवसर पर कहा कि अपना देश कृषि प्रधान देश है एवं गौपालन तथा जैविक कृषि का यहां पूर्व में बड़े स्तर पर सम्पूर्ण देश में बहुतायत में प्रचलन में थी लेकिन कालांतर में कुछ समय से अपने देश के गौवंश को ह्रास होना प्रारंभ हुआ लेकिन देश में कुछ संगठनों के सफल प्रयासों से पुन: लगता है कि एक वातावरण बनता नजर आ रहा है और निश्चित ही हम गौवंश की उचित संभाल कर पाएंगे। तत्पश्चात् उन्होंने गौशाला के संरक्षक श्री वेदप्रकाश को उनके कार्यों के लिए शुभकामनाएं दीं। यह कार्यक्रम ठाकुर रामसिंह की शताब्दी को समर्पित रहा। नेरी शोध संस्थान से आए इतिहासविद् चेतराम गर्ग ने शताब्दी समारोह पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में मण्डी संसदीय क्षेत्र के सांसद श्री रामस्वरूप शर्मा, विधायक श्री जयराम ठाकुर, श्री राजेन्द्र कुमार एवं श्री चेतराम जी मुख्य रूप से उपस्थित रहे। कान्हा गौ संवर्धन केन्द्र का उद्घाटन क्षेत्र के निवासियों के लिए बहुप्रतीक्षित एवं निश्चित ही आने वाले समय में गौशाला मील का पत्थर साबित होगी। क्षेत्र के निवासियों का कहना है कि गौ संवर्धन केन्द्र के खुलने से क्षेत्र में एक प्रकार की जागृति आयी है और गौवंश की संभाल एवं सुधार के लिए हर सम्भव प्रयास सभी के सहयोग से किये जाएंगे। गौसंवर्धन केन्द्र के वर्तमान में भारतीय नस्ल की साहीवाल तथा देशी व पहाड़ी नस्ल की गउओं को प्रारम्भिक स्तर पर रखा गया है, जिनके उपर आने वाले समय में अनुसंधान की योजना बनाई जा रही है।❖

शुभकामनाओं सहित

बाबा बाल जी

कोटला कलां
ज़िला ऊना
हिमाचल प्रदेश

आशा ने दूर की महिलाओं की निराशा

स्वयंसेवी संस्था 'जागो री' की स्वास्थ्य कार्यक्रम समन्वयक आशा ने महिलाओं के निराशा को दूर कर लिंगभेद के अंतर को मिटाने में सफलता हासिल की है। एक समय था जब महिलाएं घर की चारदीवारी में कैद होकर अधिकारों से अनभिज्ञ थीं, वहीं सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ भी आवाज उठाने से हिचकिचाती थीं। आशा ने स्वयंसेवी संस्था के फैलाशिप कार्यक्रम से जुड़ने के साथ लिंगभेद मिटाने, सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ मातृशक्ति व समाज के तमाम वर्गों में जागरूकता की अलख जगाई। यही वजह है कि जिला कांगड़ा में वर्ष 2001 में 1000 लड़कों के मुकाबले में 836 पहुंच चुकी लड़कियों की संख्या में भी कुछ सुधार आया है। वर्तमान में 1000 लड़कों के मुकाबले में जिले में 876 लड़कियां हैं। धर्मशाला नगर निगम के तहत वार्ड-14 के गांव कंडी निवासी आशा ने 2003 'जागोरी' ग्रामीण में बतौर सेवाएं शुरू की थी। उस दौरान लिंगभेद मिटाने के लिए 10 किशोरियों से फैलोशिप कार्यक्रम की शुरूआत की गई। इन किशोरियों को लिंगभेद मिटाने के साथ अन्य सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ भी जागरूक किया गया। इसके बाद कार्यक्रम का विस्तार हुआ और इसमें युवकों को भी जोड़ा गया। वजह यह थी कि इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए युवतियों के साथ युवकों को भी जागरूक करना जरूरी था। जागोरी संस्था के सहयोग से आश के किए प्रयास से प्रदेश के सबसे बड़े जिले कांगड़ा में लिंग अनुपात में सुधार होने के साथ अब समाज के हर वर्ग की मानसकता बदली है, वहीं उनमें जागरूकता भी आई है। ऐसे में लोग अब बेटियों के संरक्षण की दिशा में आगे आने लगे हैं।❖ **साभार: दैनिक जागरण**

पुण्य स्मरण

जिला मण्डी के मान्यवर संघ चालक श्री पुरूषोतम जी का निधन 17 मार्च 2016 को अपने निवास स्थान सौलीखड्ड में गत हो गया आपका जन्म 20 अप्रैल 1947 को हुआ था। आप बाल्य काल से संघ के स्वयं सेवक रहे हैं। पिछले कुछ माह से आप अस्वस्थ थे। सामाजिक कार्यों में आपका क्षेत्र के सभी लोगों को सहयोग मिलता था। स्नेही और सेवाभावी स्व. पुरुषोत्तम जी को मातृवन्दना संस्थान की भावभीनी श्रद्धांजलि।❖

श्रीमान् रूपचन्द सरोच मण्डी जिला व्यवस्था प्रमुख की पत्नी श्रीमती व्यासा सरोच का देहावसान 51 वर्ष की आयु में 18 मार्च को अपने निवास स्थान पर हुआ। वे अपनी कर्मठता से सब की सुपरिचित रही हैं। घर आए अतिथि की आप मन से सेवा करती थी। कर्मठ और सेवाभावी स्व. श्रीमती व्यासा सरोच को मातृवन्दना संस्थान की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि। ❖

समानता का पाठ पढ़ाने वाली गुरू रॉबिन

अगर वह चाहती, तो अपनी पहचान छिपाकर अमेरिकी वायुसेना में मजे से जिंदगी गुजार रही होती, लेकिन भारतीय मूल की उस मनोविज्ञान की छात्रा को यह गवारा नहीं हुआ और उसने खुद को जाहिर कर दिया है। एक तो अश्वेत, जाहिर है, इस सचबयानी के कारण उस युवा लेफ्टिनेंट की अमेरिका वायुसेना से छुट्टी हो गई। पर इसके खिलाफ उसने आवाज़ उठाई। यह और कोई नहीं रॉबिन चौरसिया थीं, जिसे इस बार ग्लोबल टीचर्स प्राइज के लिए शीर्ष दस शिक्षकों में चुना गया है। इस प्राइज के लिए 148 देशों से 8000 प्रविष्टियां आई थीं, जिनमें से दस शिक्षकों के नामों की घोषणा दिग्गज वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंस ने की है। पश्चात् उन्होंने अपने पुरखों की जन्मभूमि भारत में उस बदनाम बस्ती को, जिसे कमाठीपुरा के नाम से जाना जाता है, कर्मस्थली के लिए चुना। रॉबिन कमाठीपुरा की अंधेरी गलियों में शिक्षा की रोशनी फैलाने के कारण आज मिसाल बन गई हैं। वह यौनकर्मियों की बारह से बीस वर्ष की बच्चों को शिक्षा देने के लिए क्रांति नामक एनजीओ चलाती हैं। लेकन मुंबई जैसे शहर में, जहां आम लोगों को भी रहने के लिए मुश्किल से ठिकाना मिल पाता है, वह अपने स्कूल में पढ़ने वाली बच्चों को अंग्रेजी, कंप्यूटर, नृत्य उपचार, ध्यान, फोटोग्राफी, थिएटर और पर्यटन की शिक्षा देती हैं। अमेरिका में ही जन्मी एवं पली-बढ़ी रॉबिन ने आज जिस तरह से भारत का नाम रोशन किया है और अपने काम से वह जिस तरह सामाजिक बदलाव लाने की कोशिश कर रही हैं, वह बहुतों के लिए प्रेरणास्पद हैं। ❖

प्राचीन भारतीय धरोहर
नालंदा विश्वविद्यालय

एक सनकी और चिडचिड़े स्वभाव वाला तुर्क लुटेरा था बख्तियार खिलजी। इसने सन् 1200 में नालंदा विश्वविद्यालय जलाकर पूर्णत: नष्ट कर दिया। उसने उत्तर भारत में बौद्धों द्वारा शासित कुछ क्षेत्रों पर कब्जा भी कर लिया था। एक बार वह बहुत बीमार पड़ा उसके हकीमों ने उसको बचाने की पूरी कोशिश की। मगर वह ठीक नहीं हो सका। किसी ने उसको सलाह दी कि नालंदा विश्वविद्यालय के आयुर्वेद विभाग के प्रमुख आचार्य राहुल श्रीभद्र जी को बुलाया जाए और उनसे भारतीय विधियों से इलाज कराया जाए। उसे यह सलाह पसंद नहीं थी कि कोई भारतीय वैद्य उसके हकीमों से उत्तम ज्ञान रखते हों और वह किसी काफिर से उसका इलाज करवाए। फिर भी उसे अपनी जान बचाने के लिए उनको बुलाना पड़ा। उसने वैद्यराज के सामने शर्त रखी ''मैं तुम्हारी दी हुई कोई दवा नहीं खाऊंगा'' किसी भी तरह मुझे ठीक करो वरना मरने के लिए तैयार रहो। ''बेचारे वैद्यराज को नींद नहीं आई। बहुत उपाय सोचे अगले दिन उस सनकी के पास कुरान लेकर चले गए और कहा ''इस कुरान की पृष्ठ संख्या इतने से इतने तक पढ़ लीजिए ठीक हो जाएंगे।'' उसने पढ़ा और वह ठीक हो गया। उसको खुशी नहीं बल्कि बड़ी झुंझलाहट हुई, गुस्सा भी बहुत आया कि उसके मुसलमानी हकीमों से इन भारतीय वैद्यों का ज्ञान श्रेष्ठ क्यों है? बौद्ध धर्म और आयुर्वेद का एहसान मानने के बदले उनको पुरस्कार देना तो दूर, उसने नालंदा विश्वविद्यालय में ही आग लगवा दी। पुस्तकालयों को ही जला के राख कर दिया। वहां इतनी पुस्तकें थी कि आग लगी भी तो तीन माह तक पुस्तकें धू-धू करके जलती रहीं। उसने अनेक धर्माचार्य और बौद्ध भिक्षु मार डाले। जरा सुनिए वह कुरान पढ़कर कैसे ठीक हुआ था। हम हिन्दू किसी भी धर्म ग्रन्थ को ज़मीन पर रखके नहीं पढ़ते। थूक लगा के उसके पृष्ठ नहीं पलटते लेकिन वे ठीक उलटा करते हैं। कुरान के हर पेज को थूक लगा लगा के पलटते हैं। बस वैद्यराज राहुल श्रीभद्र ने कुरान के कुछ पृष्ठों के कोने पर एक दवा का अदृश्य लेप लगा दिया था। वह थूक के साथ मात्र दस बीस पेज की दवा चाट गया जिसके कारण वह ठीक हो गया। जहां उसको इसका एहसान मानना चाहिए था उसके बदले उसने नालंदा को नेस्तनाबूत कर दिया। नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और विख्यात केन्द्र था। महान सनातन धर्म के इस शिक्षा केन्द्र में बौद्ध धर्म के साथ ही अन्य धर्मों के तथा अनेक देशों के छात्र पढ़ते थे। अनेक पुराभिलेखों और सातवीं शती में भारत भ्रमण के लिए आए चीनी यात्री ह्वेनसांग ने 7वीं शताब्दी में यहां जीवन का महत्वपूर्ण एक वर्ष एक विद्यार्थी और एक शिक्षक के रूप में व्यतीत किया था।

स्थापना व संरक्षण: इस विश्वविद्यालय की स्थापना का श्रेय गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम 450-470 ई. को प्राप्त है। इस विश्वविद्यालय को कुमार गुप्त के उत्तराधिकारियों का पूरा सहयोग मिला। गुप्तवंशों के पतन के बाद भी आने वाले सभी शासक वंशों ने इसकी समृद्धि में अपना योगदान जारी रखा। इसे महान सम्राट् हर्षवर्धन और पाल शासकों का भी संरक्षण मिला। इस विश्वविद्यालय में भारत के विभिन्न क्षेत्रों से ही नहीं बल्कि कोरिया, जापान, चीन, तिब्बत, इंडोनेशिया, फारस तथा तुर्की से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। अत्यंत सुनियोजित ढंग से और विस्तृत क्षेत्र में बना हुआ यह विश्वविद्यालय स्थापत्य कला का अद्‌भुत नमूना था।

पुस्तकालय: नालंदा में सहस्त्रों विद्यार्थियों और आचार्यों के अध्ययन के लिए नौ तल का एक विराट पुस्तकालय था जिसमें 3 लाख से अधिक पुस्तकों का अनुपम संग्रह था। इस पुस्तकालय में सभी विषयों से संबंधित पुस्तकें थी। यह रत्नरंजक, रत्नोदधि, रत्नसागर नामक तीन विशाल भवनों में स्थित था। रत्नोदधि पुस्तकालय में अनेक अप्राप्य हस्तलिखित पुस्तकें संग्रहित थी। इनमें से अनेक पुस्तकों की प्रतिलिपियां चीनी यात्री अपने साथ भी ले गए थे। ❖

प्रश्नोत्तरी

1. *जगजननी सीता का अपहरण रावण ने किया है, यह सूचना श्रीराम को किसने दी?*
2. *वे श्रीकृष्ण की बहिन थी तथा उसका नाम कृष्णा भी था। उनका वास्तविक नाम क्या था?*
3. *हमारे देश के किन इतिहास-ग्रन्थों में आदि काल से गुप्त काल तक की सामग्री संग्रहीत है?*
4. *भारत की महान् नारियों में से एक अरून्धती किनकी पत्नी थीं?*
5. *1970 में एशियाई खेलों में गोल्ड मैडल जीतने वाली प्रथम भारतीय महिला कौन थी?*
6. *आधुनिक काल में किस भारतीय गणितज्ञ ने बताया कि किसी संख्या में शून्य का भाग देने पर भागफल 'अनंत' आता है?*
7. *त्र्यम्बकेश्वर का प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग किस स्थान पर स्थित है?*
8. *प्रसिद्ध पुस्तक 'बंच ऑफ थाट्स' किनके भाषणों का संग्रह है?*
9. *कुतुबुद्दीन ऐबक को तीन बार पछाड़ने वाले चालुक्य नरेश कौन थे?*
10. *सन् 1912 में लार्ड हार्डिंग्ज पर बम फैंकने के पुरस्कार स्वरूप जिन क्रांतिकारियों को फांसी दी गई, उनके नेता एक अध्यापक थे। उनका नाम बताएं?*

उड़ने वाली हैचेट मछली

हैचेट मछली उड़ने की क्षमता रखने वाली एक अद्भुत मछली है। 6.5 सै.मी. के आकार वाली यह छोटी मछली अमेजन एवं गुयाना के स्वच्छ पानी में पाई जाती है। जल जीवों में दिलचस्पी रखे वाले लोगों की यह पसंदीदा मछलियों में से है। खूबसूरत चमकीले चांदी जैसे रंगों वाली यह मछली अलग से ही पहचानी जाती है। इसकी गहरी छाती में मजबूत मांसपेशियां होती हैं जो इसके पंखों को शक्ति प्रदान करती हैं। जिससे इसे उड़ने की क्षमता प्राप्त होती है। उड़ान भरने से पूर्व इसकी छाती के पंख ऊपर और नीचे की तरफ फड़फड़ाते हैं और इसे उड़ान भरने के लिए तैयार कर देते हैं। उड़ान भरने के दौरान इसकी गति में तेजी से वृद्धि होती है तथा यह हवा में उठ जाती है। एक उड़ान भरने के लिए इसे काफी मेहनत करनी पड़ती है तथा लगभग बारह मीटर दौड़ना पड़ता है। इसकी उड़ान की दूरी आमतौर पर 1.5 मीटर होती है जिसके दौरान यह लगभग 90 सैंटीमीटर की ऊंचाई तक उठती है। यह मछली स्वच्छ पानी में पाए जाने वाले कीड़े-मकोड़ों को अपना आहार बनाती है।❖

हँसगुल्ला

नितिन ने सुधीर से कहा- शराब आदमी का दुश्मन है।
सुधीर बोला- लेकिन बुजुर्गों ने तो कहा है कि अपने दुश्मन को भी गले लगाना चाहिए।
नितिन ने कहा- गले लगाने के लिए ही कहा है, गले से नीचे उतारने के लिए नहीं।

SHIVALIK HOSPITAL
Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

Approved By GOVT. of H.P.

Registration No. 279,
Licence No.-HIMUDA LIC-03/2012.

Features & Facilities

- Ultra-modern Club House
- Gymnasium
- Swimming Pool
- Aerobic & Yoga Hall
- SPA, Sauna
- Putting Range
- Jogging Track
- Ample Parking Space
- Library
- Gated Community
- East Facing & Two-side Open Flats
- 80% Open Area
- Multi-tier 24x7 Security
- Fire Fighting System*
- Shopping Arcade
- Restaurants

1, 2, 3 BHK & Studio Apartments 12% assured return & lease option is available

PRITHVI INFRADEVELOPERS PVT. LTD.

Corporate Office: SCO 210-11, 4th Floor, Sector 34-A, Chandigarh
Site Office: Chail Road, Kandaghat, Near Shimla, Distt. Solan (H.P.)
Tel: 0172-4000173, +91 872 509 2222
www.newyorkresidency.in

Loan Facility Available from: HDFC

Disclaimer : Perspective views shown are architecture view, subject to change. Sizes, features & amenities are indicative.

HP/48/SML (upto 31-12-2017) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

HIM AGRO FOOD CORPORATION
Global Solution Provider For Agro Food Industry

BRINGING TOGETHER THE MAKER & THE TAKER

New age Technology that connects the Farmer and the Consumer; serving India from the farm to the fork.

Season's Greetings

HIM AGRO FOOD CORPORATION, SCO 118-119-120, 4th FLOOR, SECTOR 34-A,
CHANDIGARH-160022, PHONE: +91 172 4989999, www.hafcoindia.com

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276

STERLING SPORTS REHAB. & ADVANCE PHYSIOTHERAPY CENTRE

Think Painfree...
Think Physiotherapy
with us

Dr. Gaurav Sharma (PT)

Musculoskeletal & Sports Injury Specialist-Ortho (Gold Medalist)
Internationally Certified in Exercise Testing & Prescription
Co-founder & H.O.D. of Sterling Physiotherapy Centre

WE TREAT
The Following
Orthopedic & Sports Conditions:

- Joint Pain
- Arthritis
- Super specialized Center for Back Pain
- Advance rehabilitation for acute & chronic sports injuries
- Advanced & Hi-Tech Equipments

Awareness sessions & Treatment according to work related environment & injuries

Tricity's First Advanced Physiotherapy & Sports Rehabilitation Center

SCO 226-227, 1st Floor, Sector 34 A, Chandigarh-160022 Ph.:0172-4000414
inquiry@ssrp.in, info@ssrp.in www.ssrp.in

Global Printlink Graphics Pvt.Ltd.

Indoor & Outdoor Branding

Customized Wall Decor

Corporate Gifts

Designing, Branding, Printing & Packaging

Fastest & High Quality Printing in Tricity
HP Latex 360

WE CAN PRINT

- Wall Vinyl
- Glass Film
- Wall Covering
- Cloth Banners
- Artistic Canvas
- Banners & Posters
- Frontlits & Backlits
- Printing on Leathrite

...and many more

for more details Call:
9041 444 799 | 0172-4664799
SCO 226-227, 1st Floor, Sector 34 A, Chandigarh - 160 022
E-mail: globalprintlink34@gmail.com

समरसता विशेषांक विमोचन करते हुए महामहिम राज्यपाल

विशेषांक विमोचन कार्यक्रम में उपस्थित शिमला शहर के प्रबुद्ध जन

ऊना में परिवार मिलन कार्यक्रम में प्रवचन करते बाबा बालजी महाराज

रोहडू के प्राथमिक वर्ग में उपस्थित स्वयंसेवक

MAHARAJA AGRASEN UNIVERSITY

Spark... The Change

UGC APPROVED

Atal Shiksha Kunj, Kalujhanda Near Barotiwala, Baddi, Distt. Solan (HP)

❖ BEST UNIVERSITY OF YEAR 2015 IN THE CATAGORY "RESEARCH & DEVELOPMENT" ADJUDGED BY HIGHER EDUCATION REVIEW

❖ WINNER OF CCI TECHNOLOGY EDUCATION EXCELLENCE AWARD 2014 COMFORT BY GUJRAT TECHNOLOGICAL UNIVERSITY, GUJRAT

STRENGTHS OF THE UNIVERSITY

- All courses are as per UGC nomenclature and approved by respective regulatory bodies
- Choice Based Credit System (CBCS)
- Member: Association of Indian Universities (AIU)
- Highly Accomplished Faculty
- Regular Faculty Development Programmes
- Regular Guest Lectures by Experts from reputed Universities/ Industries
- Best exposure to National and International Seminars
- Industry Oriented Curriculum and regular Industrial Visits
- Wi-Fi Enabled Green Campus
- AC Class Rooms, Labs, Libraries and Seminar Halls etc.
- Amphitheatre and Auditorium
- Separate Hostel for Boys and Girls
- Fee Concessions/ Scholarships
- Rich Library Resources
- Medical Centre, Cafeteria, A.C Transport and ATM Facility
- Education Loan facility from Banks
- Best Placement and strong Corporate tie-ups
- Sports and Gym Facilities for Boys and Girls
- Summer Classes for the students needing additional academic support
- EWS families from surrounding areas under Corporate Social Responsibility (CSR) Project.

*Scholarship upto 50% is available for deserving candidates, for details please visit our website.

COURSES

Ph.D : ➢ Management, Travel & Tourism, Physics, Chemistry, Maths, English, Law, Environmental Sciences, ECE, ME, EEE

UNDER GRADUATE COURSES :

- ➢ B.Tech (CSE, ECE, CE, ME, EEE) (AICTE approved), LEET
- ➢ Bachelor in Architecture (Approved by COA)
- ➢ LLB, BA LLB (Hons.) (Approved by BCI)
- ➢ B.Com ➢ B.Com (Hons) ➢ BBA, BBA (Tourism & Travel)
- ➢ Bachelor in Hotel Management & Catering Technology
- ➢ B.Sc (Medical/Non-Medical)
- ➢ B.Pharm, D.Pharm
- ➢ BA (Journalism) ➢ Bachelor of Fine Arts (BFA) (4 Years)

POST GRADUATE COURSES :

- ➢ M.Tech (CSE, ECE, CE, ME, EEE)
- ➢ M.Com ➢ MBA (Master of Business Administration)
- ➢ MTTM (Master of Tourism & Travel Management) ➢ LLM
- ➢ M.Sc (Physics/Chemistry/Mathematics/Environmental Sciences/Bio-Technology/ Forensic Sciences)
- ➢ MA (English) ➢ MA (Journalism)
- ➢ Master of Fine Arts (Applied Arts/Painting/Sculpture) (2 Years)

MAIT: 15th All India rank in Engineering Including IITs & IIITs By DATAQUEST Survey 2013 Delhi Campus

Admission Open 2016-17

Admission Helpline: 093180-29217, 18, 32, 31, 35, 38, 39, 41, 45,

Website: www.mau.ac.in, Email : admission@mau.ac.in